बेफिक्री

आये थे चोला इन्सानी में अनुभव अपना कह चले
क्यों आये थे इस का भी राज़ हम पा चले
जीवन का उद्देश्य
निर्भय, निर्वैर, अडोल
और
अचिन्तपतपना है

परम संत परमदयाल
पं० फकीर चन्द जी महाराज
द्वारा रचित

दो शब्द

बेफिक्री नामी पुस्तक उर्दू भाषा में सन् १९५९ इसवी में पहली बार छपी थी और दूसरी बार दयाल मासिक पत्रिका में सन् १९६१ इसवी में मई के अंक में छपी थी। इस समय यह पुस्तक उप्लब्ध नहीं है किन्तु इस की मांग बहुत सज्जन करते रहते हैं। इस लिये इस पुस्तक को मानव मन्दिर के रूप में छाप रहे हैं। क्योंकि पुस्तक का नाम बेफिक्री है इस लिये इस पुस्तक के दो सत्संग छोड़ दिये गये हैं क्योंकि यह बेफिक्री से सम्बन्धित नहीं हैं।

इस पुस्तक को ध्यान पूर्वक पढ़ने वाले सज्जन बेफिक्री के संस्कार ग्रहण करेंगे। बेफिक्री की अवस्था को प्राप्त करने का सर्वप्रथम साधन किसी बेफिक्र महापुरुष की संगत, उस का सत्संग, उस के दर्शन उस की सेवा और उस की आज्ञा में रह कर बेफिक्री का पात्र बनना है। दाता दयाल जी महाराज भी यही फरमाते हैं।

चिन्ता चित से तज दे सारी,

सतगुरु करेंगे तेरी सहाय,

भक्ति भजन ध्यान चित देना,

जग में सुयश कीरती लेना।

भक्ति महातम प्रभाव को चान्हा,

सुख आनन्द घर पाय।

क्यों दुख पाता क्यों घबराता,

सत गुरु तेरे हैं पितु माता,

जो कोई चरन शरन में जाता,

उसे वह लेंगे बचाय।

राधास्वामी सांचे रखवारे,

रह तू उन के चरन सहारे

सुन यह सांची बात को प्योर

अपना मन समझाय

सक्रेटरी

मानवता मन्दिर होशियारपुर

प्रार्थना

ए परम तत्व !

ए एक मात्र आधार !

तू है है है !

मौज अथवा कर्म भोगवश जीवन गुज़रा अब सच्चा और नित्य मिलाप चाहता हूं ।

यदि कोई और कर्म या मौज है तो सच्चाई से करा ले !

तेरी अंश

फकीर के रूप में

सतसंग हुज़ूर परम दयाल जी महाराज स्थान दिल्ली

दिनांक १४ अक्तूबर १९५६

प्रातः काल :—

सतसंग आरम्भ करने से पूर्व मैं कुछ कहना चाहता हूं। मैं फकीर चन्द ना गुरु हूं ना महात्मा। मैं आप जैसा एक मनुष्य हूं। ये मेरा शरीर ब्राह्मण वंश में उत्पन्न हुआ। ब्रह्मण वंश में उत्पन्न होने के कारण ब्राह्मणपने और हिन्दु धर्म के संस्कार मेरे दिमाग पर पड़े। इसी कारण मैं भगवान राम अथवा उस परम तत्व को जो रचना का आधार है प्राप्त करने का जिज्ञासु हुआ। वर्षों की विरह और रोने धोने के पश्चात एक स्वप्न मुझे दाता दयाल महर्षि शिव ब्रत लाल जी महाराज के पास ले गया। उन के दरबार से ऋषियों और उपनिषदों का संस्कार मिला और राधास्वामी मत अथवा सन्त मत

की शिक्षा पर आचरण करने का आदेश मिला। किन्तु राधा स्वामीमत की वाणियों में ऐसे २ शब्द लिखे हुए थे जिन को पढ़ कर मेरे हृदय को ठोस लगी। उदाहरणतया उन शब्दों का सारांश ये था।

(१) वेद, पुराण, अथवा शास्त्र, ये सब जीव की जान को मारते हैं।

(२) सन्त ईश्वर और परमेश्वर को पैदा करने वाले हैं आदि-आदि।

इसके अतिरिक्त माया सम्वाद में सब मत मतान्त्रों का खण्डन किया हुआ था, यही कारण था कि मैं भारी दुबधा में पड़ गया कि मैं इस मत में रहूं या इसे त्याग दूं।

काफी समय सोच विचार करने के बाद मेरे मन नें गुरु आज्ञा को दृढ़ता के साथ पालन करने का निर्णय किया। इस निर्णय से मेरी दुबधा छूट गई इस लिए मैं दाता दयाल जी महाराज के आदेशानुसार जीवन व्यतीत करने लगा। इसी सिलसिले में नौकरी के समय बसरा बग़दाद में मैं ने अपनी पत्नी से अलग रह कर तप किया। उन दिनों मेरी ये इच्छा थी कि इस मार्ग पर चलने से जो लाभ मुझे प्राप्त होगा वो खोल कर अधिकारीयों को जीवन पर्यन्त

बताता रहूंगा और अब ये उसी इच्छा का परिमाण है कि मैं ये सतसंग का काम करने के लिये विवश हूं। मौज! इस के अतिरिक्त मैं फकीर हूं और दाता दयाल जी महाराज ने मुझे फकीरी का संस्कार दिया। इस दृष्टिकोण से भी जनता अथवा मालिक के बन्दों की सेवा करना मेरा कर्त्तव्य है। दाता दयाल जी महाराज फकीर के कई लक्षण बताते हैं जिन का उल्लेख फकीर परसाद नामी पुस्तक में विस्तार से लिखा गया है। इस सिलसिले में भी मुझे आदेश है कि मैं मानव जाति को सुख पहुंचाऊं। इस लिये ये सतसंग का सिलसिला जारी किया हुआ है। गुरु नानक साहिब के विषय में उन के समय में आम क़हावत थी :—

आ गया बाबा वैद्य रोगियां दा।

वह बड़े भारी सन्त थे, उनका काम सुख पहुंचाना था। मैं भी इसी दिशा में काम करता हूं। जितना भी सुख पहुंचाने का काम मुझ से हो रहा है कर रहा हूं। राधास्वामी दयाल जो राधास्वामी मत के बानी हुये हैं उन्होंने कई वर्ष पन्नी गली आगरा में तप किया और अन्त में ये फरमाया :—

यह करनी मैं आप कराऊं पहुचाऊं धुर दरबारा।

करनी नाम है नाम जपने का। जिससे आप इस रचना या दुनियां के दु:खों से बच सकते हैं। यह नाम आप को आप के गुरु दे रहे हैं। इस के बिना आप अपने ध्येय पद तक नहीं पहुच सकते। यह ध्येय पद स्पष्ट शब्दों में अचिन्तपता है। यह कष्टदायक और कठिन मार्ग नहीं है। गुरुओं के चरनों पर मत्था टेकना, फूल चढ़ाना, प्रतिदिन आना अथवा दो दो घंटे अभ्यास करना या दान करना इस मार्ग की शर्तें नहीं हैं। क्यों ? स्वामी जी का शव्द है :—

यह करनी मैं आप कराऊं

मगर शर्त क्या है या करनी क्या है ? :—

तुम अचिन्त रह धरो प्यारा

इस लिए ए राधास्वामी मत के आचार्यो ! गुरुओ ! चेलों के कानों में दो दो घंटे सारी जिन्दगी उगंलियां डलवा कर अभ्यास करवा कर क्यों उन की सेहत को खराब कर रहे हो। खबरदार ! यह बात भी ध्यान में रखनी चाहिये। यह दया (फज़ल) का मार्ग है, न कि दण्ड (अदल) का। क्योंकि गुरु पर विश्वास नहीं आता इस लिए विवशतया मेरे

जैमों या धर्म दास (जो कबीर का शिष्य था जिस ने अपना सारा धन कबीर साहिब के चरणों में भेंट कर दिया) जैसों को कुछ साधन और ज़्यादा बाणी से समझाने का यत्न किया जाता है । इस लिए कबीर साहिब फरमाते हैं :—

साधो भजन भेद है न्यारा
का माला मुद्रा के पहिरे, चंदन घसे लिलारा ।
मूड़ मुड़ाये सिर जटा रखाये, अंग लगाये छारा ॥
का पानी पाहन के पूजे, कंद मूल फलहारा ।
कहा नेम तीरथ ब्रत कीन्हे, जो नहिं तत्व विचारा ॥
का गाये का पढ़ि दिखलाये, का भरमे संसारा ।
का संध्या तरपन के कीन्हे, का षटकर्म अचारा ॥

जैसे बधिक ओट टाटी के, हाथ लिए विख चारा ।
ज्यों वक ध्यान धरै घट भीतर, अपने अंग विकारा ॥
दै परचे स्वामी ह्वै बैठे, करें विषय व्योहारा ।
ज्ञान ध्यान को मरम न जानें, बाद करैं निःकारा ॥
फूंके कान कुमति अपने से, बोझि लियो सिर भारा ।
बिन सतगुरू गुरू केतिक बहिगे, लोभ लहर की धारा ॥
गहिर गंभीर पार नहिं पावै, खण्ड अखण्ड से न्यारा ।
दृष्टि अपार चलब को सहजै, कटै भरम कै जारा ॥
निर्मल दृष्टि आतमा जा की, साहिब नाम अधारा ।
कहै कबीर तेही जन आवै, मैं तें तजें बिकारा ॥

यह कबीर साहिब का शब्द है वह फरमाते हैं

कि भजन का भेद इस बाहिरी कर्मों से (जिन का उल्लेख ऊपर के शब्द में आया है) न्यारा है। दाता दयाल का भी इस बारे मैं कथन है जो नय्यरे आज़म नामी किताब में आया है, सुन लीजिये :—

तप करें ये जप करें सुमिरन भजन,
रात दिन सहते रहें रंजो मुहन[1]
इन से क्या होता है, इन से होगा क्या,
ये कहां पाएंगे दीदारे—खुदा[2]
मखमसों[3] में कुफरो दीं[4] के जो फंसे
शैतीनियत के ग़ार[5] में आकर धंसे
यह न समझेंगे कभी क्या फज़ल[6] है
यह न जानेंगे कि क्योंकर अदल[7] है
तन प्रस्तो ज़न प्रस्तो ज़र प्रस्त[8]
एशे नफसानी में सब रहते है मस्त[9]
है इसी के वास्ते उन का वजूद[10]
ख़ुश रहें हासिल करें बूदोनमूद[11]
नय्यरे अनवर न कर इन का ख्याल
कर ले इस्तगना[12] का हासिल अब कमाल

---

1. दुख व चिन्ता, 2. साक्षातकार 3. झगड़ों 4. पाप पुण्य 5. बुरे विचारों के गढ़े में 6. दया 7. दण्ड 8. देह, स्त्री और धन के पुजारी 9. भोग विलास में सब लीन रहते हैं 10. सत्ता 11. मान प्रतिष्ठा 12. सन्तोष

अभ्यास केवल साधन है इस का फल ये है कि हम चिन्ता रहित, कष्ट क्लेश रहित और सुखी हो जाएं।

हम गृहस्थि हैं, बाल बच्चे वाले हैं, घर बार वाले हैं, कार व्यवहार भी है, हमारे कर्म बनवासियों से भिन्न हैं और मैं अपने अनुभव के आधार पर पूर्ण विश्वास से कहता हूं कि जिस अवस्था तक, जितने समय में गृहस्थि पहुंच सकता है बन के बासी, बड़े २ ज्ञानी और ध्यानी नहीं पहुंच सकते। इस के अतिरिक्त इस में एक रहस्य भी है। क्यों ?

मन के मारे बन गए बन तज बस्ती जाहि,
कहें कबीर क्या कीजिये ये मन मानें नाहिं।

सारा खेल मन को सिद्ध करने का है चाहे आप कहीं भी रहें। मैं तो यहां तक कहूंगा कि एक व्यक्ति जो घर में बाल बच्चों में रहता है और सतसंग द्वारा रहस्य का ज्ञाता हो कर बाल बच्चों और प्राणी मात्र को मालिक का रूप समझ कर उन की सेवा करता है अथवा परोपकार करता है, बनवासी साधु से कहीं अधिक अच्छा है। क्योंकि सर्व साधारण की सेवा करने वाले को मान प्रतिष्ठा के मिल जाने से अहंकार

में आकर गिर जाने का भय होता है। घर में सेवा करने वाले को अहंकार भी नहीं आएगा सेवा करते हुए भी झाड़ें सहनी पड़ती हैं, नुक्ताचीनी का भी शिकार होता है।

मेरा सत्संग विद्वत्ता पूर्ण नहीं है बल्कि क्रियात्मिक है। यदि कोई भाई मेरे सत्संग से एक भी नुक्ता ले जाए उसे आसानी से सहज ही जीवन व्यतीत करने में बहुत सहायता मिलेगी। लम्बे चौड़े ज्ञान ध्यान में क्या रखा है? मैं ये कहूंगा कि हम सब एक ही मालिक के बच्चे हैं इसलिए बिल्कुल घृणा नहीं होनी चाहिये बल्कि सच्चे हृदय से जो सेवा कोई कर सके उसे अवश्य करनी चाहिये। और इस बात का ख्याल न करते हुए सेवा करो कि उस की सेवा का आदर हो रहा है या नहीं। घर वालों से सेवक को अधिकतर सेवा करते हुए भी नुक्ताचीनी का शिकार होना पड़ता है मगर इस बात की सच्चे सेवक को परवाह नहीं होनी चाहिये।

जिन को घरों में दु:ख होते हैं वही लोग साधुओं के पास दौड़े जाते हैं। रोगी, अशान्त और भ्रम ग्रस्त

पुरुष साधुओं के पास आ जाते हैं। साधुओं और महात्माओं को चाहिये कि वो हित से ऐसे लोगों को मार्ग पर लायें किन्तु प्रायः ऐसा नहीं किया जा रहा है। इस के विपरीत सीधे साधे आदमियों को साधुओं और महात्माओं ने बुरी तरह जाल में फंसा रखा है और उनका वहां से निकलना कठिन हो रहा है। परमार्थ तो बहुत दूर रहा आसान बात को कठिन बता कर भ्रमों में वृद्धि की जा रही है।

मुझे दाता दयाल शिवब्रतलाल जी महाराज का आदेश है कि मैं निबल, अबल, और अज्ञानियों की सहायता करूं और उन्हें गुरु के देश ले जाऊं। इस लिये जो कुछ मुझ से हो सकता है मैं इस सिलसिला में कर रहा हूं। और इस बात की भी पहवाह नहीं करता कि मैं इस समय ७२ (बहत्तर) वर्ष का बूढ़ा हो गया। मैं लोगों को पर्दे में वर्तमान दिखावे की प्रथा के अनुसार नाम नहीं देता।

नाम क्या है? नाम के अर्थ समझ और ज्ञान के हैं जिससे सुख और शान्ति मिलती है। सन्त की वाणी को नाम समझिये। इस पर आचरण करने से

मनकी अस्थिरता और चंचलता दूर होगी। सुमिरन, ध्यान और भजन, का साधन मन को स्थिर करने के लिए बहुत लाभदायक है किन्तु जैसे कि सन्त कृपाल सिंह जी कहा करते हैं इस बात का ध्यान रखिये कि ये केवल साधन है, इष्ट नहीं। इष्ट तो अचिन्तपना है जिस को प्राप्त करना है। इस क्रम में मैं आप को चार बातें बताना चाहता हूं।

-: पहली बात :-

हमारे घर के जितने दुःख हैं उन का उपाय क्रियात्मिक जीवन में छिपा हुआ है। अपने कर्त्तव्य को अच्छी प्रकार निभाओ, निष्काम सेवा का अर्थ कर्त्तव्य को निभाना ही तो है और घर वालों की नुक्ताचीनियों और झिड़कों की बौछाड़ सहन करते हुए यदि आप ना घबराते हैं और ना डोलते हैं तो ये समझिये कि आप सन्तों और फकीरों से महान हैं।

सोचिये, सन्तपना क्या है ? जो अपनी चित्त की वृत्ति को अडोल रखता है वो सन्त है। जिस में सहन शीलता है और घबराता नहीं वो सन्त है

इस लिये घर में रहते हुए न घबराना, न डोलना सन्तपना नहीं तो क्या है। घर में रहते हुए घर वालों की निष्काम सेवा ऐसा गुर है जिससे आप को हमेशा खुशी मिलेगी। मैं स्वयं इसी पर आचरण करता हूं और खुश रहता हूं। मैं आसमान से नहीं उतरा जिस की वजह से खुश नज़र आता हूं। ये साफ और सच्ची बात है।

कहा गया है कि दान घर से शुरू होता है Charity Begins at home ये ठीक है। पहले घर वालों की सेवा फिर औरों की। इस सेवा से आप को यह फायदा होगा कि आप का दिल विपत्ति समय दुख कम महसूस करेगा। बल्कि अभ्यास करते रहने से कष्ट क्लेश आप की नजरों से ओझल हो जाएंगे। यह भी हो सकता है कि आप के क्रियात्मिक जीवन के फलस्वरूप दूसरों के जीवन बदल जाएं। उस समय आप गुरू का काम करेंगे, मगर शर्त ये है कि सेवा निष्काम हो और कर्त्तव्य के रूप में हो, यह एक नुक्ता है जो मैं बता रहा हूं। इसे सत्संग समझिये और विश्वास रखिये कि अढ़ाई घड़ी का सत्संग सौ वर्ष की पूजा से उत्तम है। हजूर सांवले

शाह (बाबा सावन सिंहजी महाराज) भी प्रायः ऐसा ही कहा करते थे।

अपनी चित्त की वृत्ति को अडोल रखने का ध्यान रखिये और इस चक्कर में ना पड़िये कि अन्दर प्रकाश व शब्द नहीं खुले या थोड़े खुले हैं। उद्देश्य तो केवल आनन्दमय क्रियात्मिक जीवन है और बस ! यदि आप को किसी की बात सुन कर क्रोध नहीं आता और ना ही कुढ़ते हो तो समझ लीजिये कि आप सन्त है अन्यथा नहीं,—

दूसरी बात

जो कुछ मैं ने कहा है उसे सुख और शन्ति से जीवन व्यतीत करने का एक साधन समझिये। दूसरा उपाय यह है कि अपने जीवन की अवश्यकताओं को अपनी आय तक सीमित रखो। यदि आप ऐसा नहीं करेंगे तो लाख नाम जपलो अशान्ति और दुःख तुम्हारे भाग्य में आएंगे। इस विषय में अंग्रेज़ी की कहावत ध्यान में रखने के योग्य है Cut your Coat according to your Cloth) इस का अभिप्राय ये है कि कर्ज़ा मत लो,लोक लाज की तरफ ध्यान न दो। कर्जा लेकर शादियें करोगे तो परिणाम अच्छा नहीं

होगा, अशान्ति भाग्य में आएगी। महात्मा लोगों को भी अज्ञान में आकर अपनी शक्ति से अधिक भेंट करके विपत्ति मोल लेना है और सच पूछिये ये बनावटी महात्मा जो पैसा बटोरने के पीछे पड़े हुए हैं तुम्हें कहीं का भी नहीं छोड़ेंगे। आप सभी को सावधान रहना चाहिये।

तीसरी बात

इन्सान का मन चंचल है स्थिर नहीं। इस का उपाय यह है कि प्रत्येक समय काम में मग्न रहना चाहिये। बेकार न रहना चाहिये। जिन व्यक्तियों का काम करने का स्वभाव नहीं है और बेकार रहते हैं अथवा मन लगा कर काम करने का अभ्यास नहीं है उन की वृत्ति अन्तर में कभी एकाग्र नहीं हो सकती। पहले बाहर के काम में मन लगाना सीखो ये अति अवश्य है तब परमार्थ के रहस्य के ज्ञाता बन सकोगे। मुझे देखिये इतनी आयु हो गई काम करता रहता हूं। कई चंचल वृत्ति वाली महिलायें मेरे पास आतो हैं। क्योंकि मेरी भावना उनको सुख पहुंचाने की है मैं नीति में काम लेकर उन्हें कह देता हूं कि रुई लाकर सूत कातिये, उस सूत से

मुझे कपड़ा बनवा दीजिये और सूत कातते समय मेरा ध्यान करो। इन का कुछ समय इस काम में व्यतीत हो जाता है। उन के मन की चचंलताई में अपने आप कमी आनी शुरू हो जाती है। फिर क्या है, अभ्यास करो या काम, सफलता होगी और खुशी मिलेगी। मैं समझता हूं कि इन्सान का मन लगा कर काम करना ही एक प्रकार का भजन है। बाहर वृत्ति टिकते ही अन्तर काम बना बनाया है यह एक रहस्य है

चौथी बात

शान्ति प्राप्त करने की चौथी विधि ये है कि आप को निर्भय होना चाहिये। मेरे अनुभव में ये बात आई है कि ये परमार्थ जिस की आप इतनी चर्चा सुनते हैं बहुत ही सरल है किन्तु उन के लिए नहीं जिन का जीवन विषय विकार में गुज़रा है। जिन लड़कों ने युवा अवस्था से पूर्व अपने ब्रह्मचर्य को अनुचित ढंग से खोया है उन के भाग्य में रोना और धोना अवश्य रहेगा। इन्सान की अशान्ति का कारण क्या है इसे मैं अनुभव के आधार पर अच्छी तरह समझता हूं। कोई मुझे ग़लती से अहंकारी कहले, मैं प्रकृति के नियम का ज्ञाता हूं। अंग्रेजी भाषा में

ऐसे पुरुष को (Master of law of nature) कहा जाता है। और सच पूछिये तो एक निपुण डाक्टर ही शारीरिक मशीन का पूरा ज्ञान रखने के कारण ठीक निर्णय (DIAGNOSIS) कर सकता है। इसी प्रकार मेरी अवस्था यह है कि मैं किसी की अशान्ति के कारण बता सकता हूं। ये भी याद रहे कि जिन २ पुरुषों की बचपन में शादी हुई या जिन माता पिता में अशान्ति का दोष रहा उन की संन्तान में अशान्ति का आना स्वाभाविक है। मेरी शादी भी १३ वर्ष की आयु में हो गई, सोलह वर्ष की आयु में गृहस्थ में फंसा, इस दशा में मुझे भी बड़ी अशान्ति का सामना करना पड़ा। यदि मुझे दाता दयाल जी महाराज १२ वर्ष के लिये बसरा बग़दाद में अकेले काम पर ना लगाते तो मैं भी पतित हो जाता।

इसलिये आवश्यक है कि लड़के और लड़कियां प्रौढ़ Naturity आने तक ब्रह्मचारी रहें। ऐसा न करने से किसी नाम से भी शान्ति लाभ न होगा। ये बात मैं दावे से कहता हूं।

मैं आप सब का हितैषी हूं और विशेष रूप में मैं उनका जो अशान्ति को दूर करने के लिए साधु

महात्माओं के दर पर भीख मांगते हैं, ऐसे दुखियों की सहायता के लिए ही मेरा प्राक्ट्य हुआ है। ऐसा दाता दयाल जी महाराज ने फरमाया हुआ है। मैं कहता हूं ए इन्सान ! तुझ पर दया करने वाला तेरा अपना कर्म है। कर्म को क्यों नहीं ठीक करता ? तू शेर का बच्चा है ! तू सत पुरुष की अंश है !! तू अज्ञान के वश में यदि रहस्य को न समझ कर आर्त बन कर तीर्थों मन्दिरों में जा कर झोली फैला रहा है तो इस से तुझे अस्थाई शान्ति तो मिलेगी किन्तु पूरा लाभ नहीं होगा यह तुझे शोभा नहीं देता है।

मैं जो कुछ कह रहा हूं उसे ध्यान से सुनिये और सोचिये। हम दुःखी क्यों हैं ? क्योंकि चिन्ता में रहते हैं। क्या यह आश्चर्यजनक नहीं कि बचपन में अचिन्त होते हुये अब हम चिन्ता में पड़े रहते हैं। सुनिये महर्षि शिवव्रतलाल जी महाराज क्या फरमाते हैं :—

जब न थी अकल तो मासूम[1] थे बेफिक्र थे हम।
अब तरदद्[2] में पड़े आकल व दाना[3] हो कर।

---

1. अनजान 2. चिन्ता 3. बुद्धिमान।

निष्काम सेवा और कर्त्तव्य को पूर्ण रूप से निभाने से यह चिन्ता अपने आप चली जाती है। कोई समय

था, मैं भी अपनी पत्नी की शिकायत किया करता था। एक बार दाता को शिकायत लिख भेजी। उन्हों ने उत्तर में लिखा कि जब भाग्यवती भाग में आ गई अब भागने से क्या लाभ। अब कैसी कमी और कैसी शिकायत, ज्यों ज्यों मेरी दृष्टि ऊंची चढ़ती गई मैं उसमें बजाय अवगुणों के गुण देखने लगा और वह भी अब इतनी सेवा करतो है कि जिस की कोई हद नहीं। इस बुढ़ापे में मेरी बहुत सेवा करती है यहां तक कि मेरा पेशाब तक बिना संकोच उठाती है, हुक्का, तैयार करती है। यह शिकायतें आप की अज्ञानता को प्रकट करती हैं अन्यथा यहां कौन ऐसा व्यक्ति है जिस में दोष न हों। अब दाता दयाल जी महाराज की बाणी सुनिये :—

जो शिकायत करते रहते हैं वह दुनियाँदार[1] हैं।
जिन को शिकवा[2] ही नहीं वह महरमे इसरार[3] हैं।

---

1. धोके में 2. शिकायत 3. सार भेदी।

जब इन्सान की दृष्टि ऊंचे चढ़ जाती है फिर क्या होता है ?

दुनियां अपने लिए है फरदोस बरीं[1]
दिल हो गया पाक[2] खाली अज़रशक व-कीं[3]
नैय्यर सद शुकर है खुदा की रहमत[4]
है रहमो करम[5] की फज़ल की जा[6] फर्श ज़मीं[7]

1. पृथ्वी पर स्वर्ग 2. पवित्र 3. द्वेष व मत्सर
4. कृपा 5. दया कृपा 6. जगह 7. पृथ्वी

मैं आप लोगों को लोक लाज का ख्याल न रख कर अपनी त्रुटियां और घरेलू हालात बताता रहता हूं। क्यों? क्योंकि मैं आपका हितैषी हूं। मेरा भाव केवल इतना है कि किसी न किसी तरह आप बात समझ कर सुख पा सकें और बस! सज्जनो! हस्पताल में बीमार जाया करते हैं न कि स्वस्थ। स्वस्थ जायेंगे तो डाक्टर को परेशान कर देंगे। इसी प्रकार सत्संगों में और मेरे पास केवल दुःखी लोग आते हैं। मेरे पास सुखियों का क्या काम। इसलिये मेरा कर्त्तव्य बनता है कि मैं हित चित्त से उनका दुःख दूर करने के लिए यत्न करूं।

मैं कोई दावा नहीं करता कि मैं जो कुछ कहता हूं यह उनका ठीक इलाज है। मैं अपनी समझ के अनुसार उन्हें उनका दुःख दूर करने के लिए राय देता हूं और मैं समझता हूं कि यही सत्संग है। इस के अतिरिक्त मैं अब किसी धर्म पंथ का अनुयायी नहीं रहा। कारण? यह असलियत तक पहुंचाने के लिए केवल साधन हैं। मैं इष्ट पद तक पहुंच गया और यह सब दाता दयाल जी महाराज की कृपा के

कारण है। उन्होंने मुझे भेद दिया, ऐसी कुंजी दे दी जिससे सुखों का कीमती संदूक खोल लिया गया है।

अब आप लोग दूर दूर से मेरे सतसंग के लिये आये हैं इसलिए मेरे सिर पर कर्त्तव्य है कि मैं पाखण्ड रहित होता हुआ आप को असलियत की बातें बताऊं और यदि मैं आप को धोके में रखता हूं तो मैं दोषी हूंगा। कैसा दोषी? व्यवहारिक और सामाजिक दोषी। मगर मैं आप भाइयों को विश्वास दिलाता हूं कि मैं जो कुछ कह रहा हूं और आगे कहूंगा वह साफ और निःस्वार्थ होगा और मेरे निज अनुभव के आधार पर होगा न कि सुनी सुनाई बातें। हां! मैं फूंक नहीं मारा करता और न ही अन्य महात्माओं की तरह झूठा आश्वासन देता हूं। मैं सच कहता हूं कि मज़हबी नेताओं और मज़हबों ने आप की आंखों में धूल डाल रखी है और आप को भ्रम में रखा है। और यह स्वामी जी की बाणी के अनुसार जीवों की जान मारते हैं।

एक दिन श्री गोपाल दास जी अमृतसर निवासी ने प्रण किया कि जब तक उन्हें मेरे दर्शन ना होंगे

वो अन्न जल नहीं ग्रहण करेंगे। मुझे इस बात का कोई ज्ञान नहीं था। मैं किसी और काम के कारण स्टेशन पर आ निकला और वे बड़े खुश हुए। मेरी बहुत प्रशंसा की कि मैं अन्तरयामी हूं। वास्तव में इस विषय में अथवा उसके प्रण के विषय में मैं अनभिज्ञ था। सच पूछिये तो इस में उस की प्रबल इच्छा सम्मिलित थी जो मुझे खींच कर वहां ले आई अन्यथा इस में कोई रहस्य नहीं है। माहत्मा ऐसी बातों को छिपाते हैं परन्तु मैं ऐसा नहीं करता वो मेरी बातों को कुफर समझते हैं। समझें। मैं निःस्वार्थ फकीर हूं मुझे गुरु का संस्कार मिला हुआ है, ये अन्तर है। चलो !

आप लोग नाम तो जपते हैं मगर आचार विहार ठीक नहीं। बुरी २ बातें सोचते रहते हैं। कोई सोचता है कि उस का भाई मर जाए तो अच्छा है कि उसे उसका धन हाथ लग जाए। कोई सोचता है कि उस की बहु थोड़ी दहेज़ लाई है वो मर जाये तो वो दूसरी शादी कर ले ताकि कमी पूरी हो जाये आदि-आदि। जब तक आप लोगों के इस प्रकार के व्यवहार न जाएंगे लाख नाम जपिये ये आप को ले डूबेंगे।

एक बार मैं दाता दयाल जी महाराज के पास लाहौर गया उन की लड़की चुनमुन जो गौरी शंकर लाल अखतर की पत्नी थी मर गई। दाता दयाल जी महाराज ने फरमाया मेरी लड़की मर गई है ये मेरे कर्म का फल है। फिर फरमाने लगे कि जब मैं इस पथ पर चलने लगा मुझे विचार आया कि जिस पर संसार के बन्धन कम हैं वो इष्ट स्थान पर शीघ्र पहुंच जाता है। इसी लिये मेरा परिवार थोड़ा है और घटता जा रहा है। ये बातें सत्य हैं। गौरी शंकर लाल अखतर भी कुछ समय पूर्व कहा करते थे कि उन की स्त्री मर जाए तो अच्छी प्रकार नाम जपें और ऐसा ही हुआ कि उस की स्त्री चुनमुन मर गई। मैं ने दिल की किताब पढ़ी है। मैं जानता हूं कि विचार में कितनी शक्ति है इस लिये तुम को कहूंगा कि जो विचार करो वह शुभ हों अन्यथा विपत्ति आएगी। ये अशुभ विचार तुम्हारी अशान्ति का मुख्य कारण हैं। ये तुम को अन्तिम अवस्था तक जो अचिन्तपना है ना पहूंचने देंगे। अचिन्तपने में निर्भयता और निर्वैरता हैं। जब तुम अचिन्तपने तक ना पहुंच सकोगे ये निर्वैरता और निडरता कैसे

आएगी। अचिन्तपने को प्राप्त करने के लिये भी आप को विशेष नियमों का पालन करना पड़ेगा।

जिनका दाता दयाल जी महाराज की बाणी में उल्लेख है।

जिस के मन नहीं चिन्ता व्यापे, जग में वही है दास फकीर।
अभय रहे चित गुरु पद राखे, धीर वीर गम्भीर।
शान्त भाव व्यवहार परमारथ, कभी न हो दिलगीर॥
अपनी पीर न उर में साले, लखे पराई पीर।
पर की पीर जिसे ना सतावे, सो अधरम बे पीर॥
अपना रूप संभाले पल पल, काट मोह जंजीर।
यह फकीर है गुरु को प्यारा, महावीर चित धीर॥
चाह गई चिन्ता सब भागी, आया भव निधि तीर।
हंस रूप धर त्याग नीर को, गह लिया ज्ञान का क्षीर।
राधा स्वामी गुरु का सच्चा बालक, पहर विराग का चीर।
तन के रहते मुक्त विदेही, सहे न द्वन्द शरीर॥

मैं ने आप को अचिन्तपने को प्राप्त करने के बारे में कहा है। दाता दयाल जी महाराज ने भी यही फरमाया जैसा कि बानी में आया है। गुरु नानक साहिब ने भी सारी आयु के तप के बाद यही फैसला किया :-

निर्भौ निर्वैर, अकाल मूर्त आदि।

इस के इलावा गुरु नानक साहिब क्या फरमाते हैं :-

कर्मी आवे कपड़ा, नदरी मोख द्वार।

जीवन की आवश्कतायें कर्म से मिलेंगी और मुक्ति का द्वार अन्तर दृष्टि अर्थात समझ से आयेगा।

सावधान होकर सत्संग सुनो कि मैं क्या कह रहा हूं। दु:ख क्या है? हमारा अज्ञान। मुक्ति क्या है? हमारा ज्ञान। सब शास्त्र यही कहते हैं कि ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं मिलती और यह ज्ञान कब मिलेगा? समझ से, सोझी से। यह धीरे धीरे प्राप्त होंगे जब हमारे कर्म ठीक हो जायेंगे। हमारे दु:खो का कारण भी यही है कि हमारे कर्म ठीक नहीं। दुनियां ने कर्म यह समझ रखा है कि माला फेरनी, मन्दिर में जाना, सुखमनी पढ़ना आदि आदि। गो यह भी एक प्रकार के कर्म हैं मगर यह ऐसे ही हैं जैसे प्रारम्भिक श्रेणियों में बच्चे पहाड़े पढ़ा करते हैं। व्यवहार को ठीक करो। झूठ, धोका, छल कपट, दूसरे के मन को न दुखाओ यह अति आवश्यक है। क्यों?

परवाज़[1] रूह को है अगर दिल है पाक साफ।
उस में असर नुमायां[2] है कुदसी त्यूर[3] का

---

1 उड़ना 2 प्रकट 3. पवित्र पक्षी।

तुम एक हो सब की पीढ़ कैसे हर लोगे। पहिले उनका दुःख देखो जो प्रकृति ने तुम्हारे साथ लगा रखे हैं। घर में मां के लिए तो रोटी नहीं, तुम्हारी स्त्री का इस से घना वैर है, रात दिन सास बहु की लड़ाई है, बाहिर क्या करोगे! घर में भाई भाई की लड़ाई, मुकद्दमा बाज़ी, तुम पराई पीर का कैसे अनुभव कर सकते हो? जब तक घर में या तुम्हारे आस पास अशान्ति का वातावरण है, तुम को सुख सन्तोष और शान्ति कैसे प्राप्त हो सकती है। जीवन को क्रियात्मिक बनाओ। घर में क्रियात्मिक रूप से या अन्य किसी विधी से सुख शान्ति पैदा करो। घर वालो से प्रेम करो। उनके जीवन की आवश्यकताओं का ध्यान रक्खो। भूखी मां को रोटी दो फिर तुम साधुओं को रोटी देने का सोच सकते हो। वर्तमान परिस्थितियां पिछले समय से भिन्न हैं। लोगों को पेट भरना कठिन हो रहा है।

हम देखते हैं कि आजकल अनुशासन हीनता और दुर्व्यवहार बढ़ रहे हैं पहले यह दशा नहीं थी। पहले शर्म और समझ थी। मैं आप बड़े भाई के सामने हुक्का या सिगरेट नहीं पिया करता था। आजकल तो बच्चे अपने पिता के सामने ऐसी ऐसी असभ्य बातें करते हैं। यह सब बरबादी के लक्षण हैं। जो इन से बचेगा, अनुशासन में रहेगा वह लाभ उठायेगा। हां जो अच्छी बातें ग्रहन करने के योग्य हैं उनको समयानुकूल बदल कर ग्रहन करने में भला है।

मैं किसी को राधास्वामी मत का ग़लत अनुयायी नहीं बनाना चाहता। राधास्वामी मत के अर्थ हैं सत्त पुरुष राधास्वामी की राय। झगड़े की बातों में क्या रखा है। मैं आप मुसलमान भी हूं, सिख हूं, हिन्दू हूं और भी जितने मज़हब हैं उनका अनुयाई हूं Sectarian किसी विशेष पंथ का नहीं हूं। सब का हूं। Sectarian पक्षपाती हो जाते हैं और पक्षपात ही संकीर्णता है जो इन्सान की उन्नति को हर समय रोकता है। मैंने दाता दयाल जी महाराज के जीवन से यही समझा है। मैंने जो कुछ कहा उस को समझने का पूरा यत्न कीजिये इससे आपको लाभ होगा। तजुर्बा कर

लें। इससे अगले सत्संगों में मन के जगत का और अत्मा के जगत का वर्णन किया जायेगा। जिन पुरुषों के शरीर, मन और रूह सम अवस्था में हैं वह अपने जीवन को सुख से गुज़ार सकते हैं। जो केवल अध्यात्म प्रिय हैं वह भी डूबे। जो शरीर को पूजते हैं वह भी मरे! जो केवल मन की सीमा तक रह गये वह भी जीवन के पूरे सुखों से वंचित रहे। इस बारे में कबीर साहिब फरमाते हैं।

कबीरा तीनों तार मिलाई।

(तन द्रुस्ती, मन द्रुस्ती, रूह द्रुस्ती जरूरी चाहिये)

इसी को सम अवस्था (Balanced State) कहते है। जब तक यह सम अवस्था न आएगी जीवन शान्तमय न होगा। यदि अच्छा भाग्य हो तो किसी क्रियात्मिक पुरुष का जो आप सम अवस्था में रहता हो सत्संग मिलता रहे तो यह अवस्था शीघ्र प्राप्त हो सकती है और मैं आप लोगों को जो सचमुच कुछ प्राप्त करना चाहते हैं ये कहूंगा कि सत्संग में मेरी आखों और मुखमण्डल की ओर दृष्टि रहे। यदि ऐसा करने से आप के मानसिक और आत्मिक दुःख दूर नहीं होते तो मेरे जीवन से कोई लाभ नहीं। क्यों?

क्योंकि वो सन्त ही क्या हुआ जिसके सत्संग से बेफिक्री का धन, खुशी अथवा शान्ति न मिले। सांसारिक दृष्टि कोण से यों समझो कि एक स्त्री जो अपने पती को कामातुर नहीं कर सकती वो हीजड़ी और फूहड़ है। सच्चे अर्थ में उस में स्त्री के गुण नहीं हैं।

मैं ये सत्संग का काम अपने आप नहीं करा रहा हूं बल्कि ऐसा करने के लिये विवश हूं। मैं एक बार सन १९४२ ई० में अपना पीछा छुड़ाने की इच्छा से हज़ूर सावले साह (बाबा सावन सिंह जी महाराज) के पास ब्यास पहुंचा, प्रार्थना की कि चाहे दाता दयाल जी महाराज का आदेश है यदि आप कहें तो मैं यह सत्संग का काम छोड़ दूं। आप ने फरमाया कि तुम इस काम को क्यों छोड़ना चाहते हो? मैंने कहा कि मैंने तो सच बोलना है, झूठ मुझ से बोला नहीं जाता। सच्ची बात सुनकर बहुत से भाई मुझ से नाराज़ होंगे। उन्होंने मेरी पीठ पर हाथ रख कर कहा कि मैं तेरा संरक्षक रहूंगा तू काम कर। मेरे सिर पर जिम्मेदारी और कर्त्तव्य है इसीलिये इस काम को निभा रहा हूं।

लोग कहते हैं कि मेरे पास देने को बहुत कुछ है मगर मेरा ख्याल कुछ और है। अन्य महात्मा लोग मेरी समझ में हेरा फेरी करते हैं किन्तु मुझ से ये काम नहीं हो सकता क्योंकि मेरी आत्मा आज्ञा नहीं देती। थोड़े दिन हुये एकादशी के दिन एक महिला का देहान्त हो गया। कहते हैं जब वो मरने लगी तो मैं उसके लिए एक पालकी ले आया और फिर वो कहने लगी कि इस में बैठा कर एक अच्छी जगह ले गया। वो यह भी कहती थी कि उस समय मेरा रूप सूर्य की भांति प्रकाशवान था। मैं सच कहता हूं कि मुझे इस घटना का बिल्कुल कोई ज्ञान नहीं बल्कि यहां तक कि इस महिला को मैं जानता तक नहीं। सम्भव है अन्य महात्मा ऐसी घटनाओं को अपनी उदरपूर्ति का साधन बना कर सत्संगियों से खूब रुपया बटोरते हों और मान लेते हों। मुझे आप को लुटते देखकर दया आती है। इसलिए मैं सच्ची २ बातें आप को ब्यान करता रहता हूं ताकि सावधान रहो। कोई पूछ सकता है कि इस औरत के अन्दर उस समय वास्तव में कौन था जो फकीर चन्द अथवा पालकी के रूप में आया। मैं कहता हूं मानव के अपने

ही विचार हैं। जो खेल स्वप्न अवस्था में दृष्टि-गोचर होते हैं वो भी तो इसी प्रकार प्रकट होते हैं। इस प्रकार की अनेक घटनाएं लोग मुझे सुनाते हैं किन्तु इस में सच्चाई यही है जो मैं ने ऊपर बता दी।

वर्तमान धार्मिक झगड़े अज्ञान और स्वार्थ के कारण हैं। जीव अज्ञानी हैं, परस्पर लड़ रहे हैं ये अज्ञनता नहीं तो और क्या है ! जो सत के जानने वाले हैं वो झगड़ों में नहीं फंसते। प्रकृति दयावान है संसार वालों के अज्ञान को दूर करने के लिये कभी कोई महापुरुष पैदा हो जाता है कभी कोई। पहले कबीर साहिब प्रकट हुआ, फिर नानक साहिब आये, राधा स्वामी दयाल प्रकट हुये, महर्षि शिव व्रतलाल जी महाराज और बाबा सावन सिंह जी महाराज आये। जिन्होंने उन्हें सतपुरुष के रूप में समझा और उन की बात को समझा वे तर गये। बहुत लोगों को उनकी बात पर विश्वास ही नहीं आया। उनकी बात का अर्थ कुछ और समझा जिनके भाग्य अच्छे थे बात को समझ कर लाभ उठा गये शेष वन्चित रह गये।

कई गद्दियों वाले मुझ से सहमत नहीं क्योंकि स्पष्ट वर्णन करता हूं और इसलिये उनके मण्डलों की हानि होती है। मैं तो ये समझता हूं कि काठ की हंडिया कब तक काम देगी ! सच्चाई अन्त में सच्चाई ही है। मैं सत्य कहने में विवश हूं। कब तक भोले भाले लोगों को अज्ञान में रखा जा सकता है। युग बदल गया, बदलो।

सज्जनो ! अपने कर्म को शुभ बनाओ इसी से जीवन सुधरते हैं और इसी से बिगड़ते हैं। मेरी बातें अच्छी लगें तो मेरे पास आओ नहीं तो कौन आप को बुलाने जाता है कि अवश्य ही मेरे पास आओ। तुम्हारा कल्याण करने वाला तुम्हारा अपना ही आत्मा है। मन को शुद्ध करते जाओ काम बना बनाया है। केवल अपने आत्मा को सच्चे सत्संग द्वारा शुद्ध करो।

सतगुरु एक शक्ति है। सांवले शाह भी एक शक्ति है। ये दृष्यमान शरीर वास्विक सतगुरु नहीं, ये तो समय पर चला जाएगा। कबीर साहिब फरमाते हैं।

गुरु किया है देह को, सतगुरु चीना नाहिं।
कहें कबीर ता दास को, तीन ताप भरमाहिं।

ए इन्सान! सतगुरु (शक्ति) तेरे अन्तर रहता है जो दाता दयाल जी महाराज के शब्द में वर्णन किया गया है। और याद रख तेरा विश्वास बहुत काम करता है।

ढूंढ मुझको अपने मन में, मैं तो तेरे पास हूं।
मैं न कासी हूं न मथुरा, मैं न गिर कलास हूं।
तू हुआ मेरा तो मैं भी, देख तेरा बन गया।
कर भरोसा मेरा मैं ही, तेरी सच्ची आस हूं।
तेरे भीतर मेरी बैठक, आंख से ले देख अब।
मैं नहीं पृथ्वी की मूरत, मैं नहीं आकास हूं।
किस भरम में है पड़ा, निभ्रान्त चित से शान्त हो।
आप मैं हूं योग युक्ति, आप शब्द अभ्यास हूं।
राधास्वामी नाम ले, और नाम में विश्राम ले।
सुख ले और आनन्द ले मुझ, से मैं ही सुख रास हूं।

लोग गुरु का रूप न समझ कर भ्रम में पड़े हैं और क्या कहा जाये! गुरु तुम्हारे मन में रहता हूं और तुम्हारी सच्ची आस है। बाहर के गुरु के बचनों को श्रवण और मनन करके उनका निष्कर्ष

निकाल कर उन पर अमल करो। इनके वचन वास्तिवक रहस्य हैं और असली हकीकत प्रकट करते हैं। मैं तो आप को सुखी देखना चाहता हूं। जो कुछ मैंने कहा इस पर ध्यान दें। धर्म, अर्थ काम **और मोक्ष की समय पर प्राप्ति हो जाएगी।**

सब को राधास्वामी !
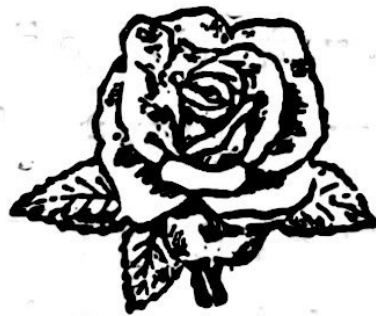
सतसंग हजूर परम दयाल जी महाराज स्थान दिल्ली

सायं काल　　　　　　　　१४ अक्तूबर १९५६ ई०

मैंने कल सायंकाल को यहां दूर से आये हुए सत्संगियों को दो शब्द कहे। क्या कहा? यह कि ए इन्सान! तू इस संसार में अशान्त है और तेरा इलाज सतगुरु के पास है चाहे वह किसी भी रूप में प्रकट हो। गुरु नानक साहिब के रूप मैं उसने यूं कहां :-

मालिक का रूप निभौं निर्वैर और अकाल है। जब तक तुम इस अवस्था को प्राप्त नहीं कर लेते काम नहीं बनता। स्वामी जो के रूप में उस ने यूं कहा :-

यह करनी मैं आप कराऊं पहुंचाऊ धुर दरबारा,
तुम अचिन्त रह धरो पियारा।

अभिप्राय यह है कि सतगुरु आप बेग़मी, बेफिक्री और अचिन्तपने का रूप है। उसकी पूजा ही बेग़मी और बेफिक्री और अचिन्तपने की पूजा है जिसको हम अपने में पैदा करना चाहते हैं इस समय के सतसंग में मैं उन कष्टों का उल्लेख करना चाहता

हूं जो हमारे ख्याल, संकल्प, मन और बुद्धि के कारण पैदा होते हैं। जो कुछ मैं ब्यान करूंगा वह केवल मेरे अपने अनुभव के आधार पर होगा। मैं आप घरेलू, मानसिक और आत्मिक दुःखों से अशान्त रहा करता था। यही कारण था कि मुझे उन दुःखों की निवृत्ति के लिए दौड़ धूप करनी पड़ी। बसंरा से छुट्टी ले कर गुरु महाराज के पास आया करता था आरती उतारता, रुपया भेंट करता। लोग दिन को जागते रात को सोते हैं, मैं रात को भी जाग कर नाम जपता रहता था। मुझे एक धुन थी जिसमें बहुत देर तक लगा रहा। उस समय मैं सुखी नहीं था। अगर सुखी होता तो आनन्द की नींद सोता रात को क्यों जागता।

आप सब किसी वस्तु की तलाश में है। वह वस्तु है खुशी, सुख. बेग़मी, बेफिक्री, अचिन्तपना और यह नाम केवल साधन है जिससे आप इन को प्राप्त कर सक़ते हैं। यही सुमिरन ध्यान भजन है। मन के दुःखों को दूर करने का यही इलाज है किन्तु यह पूर्ण गुरु द्वारा होना चाहिए अन्यथा विपत्ति मूल लेना है। इसलिए कहा गया है :-

पूरे गुरु को ढूंढ तेरे भले की कहूं ।

यह नाम दुखियों का दुःख दूर करने के लिए है किन्तु आज हम देखते हैं कि नाम ज़बरदस्ती से उन को भी दिया जा रहा है जो सुखी हैं । इससे अधिक दुःखपूर्ण बात क्या हो सकती है। अन्य शब्दों में स्वस्थ को भी रोगी कह कर दवाई दी जा रही है । इस का प्रकट कारण यही हो सकता है कि डाक्टर किसी न किसी प्रकार दवाईयों का मूल्य लेना चाहता है । स्पष्ट शब्दों में जीवों के अज्ञान को मिटाने का यत्न नहीं किया जाता बल्कि एक सम्प्रदाय या गुट अथवा किसी और उद्देश्य के लिए या आप अज्ञान के कारण मज़हब के बानी आप लोगों को भार लादने वाला पशु बना रहे हैं ।

भाइयो ! इस संसार से आप का जन्म केवल इबादत के लिए नहीं हुआ । यह इबादत और नाम आदि साधन हैं ताकि हम और आप यहां खुश, बेफिक्र, निर्भय और अडोल रह सकें । इसलिए इबादत और नाम किसी पूर्ण पुरुष के आज्ञा अधीन हों । तुम्हें यहां ज़िन्दा दिलों की तरह रहना चाहिये

और यही ज़िन्दगी है। इसके अतिरिक्त इस की कुछ सत्ता नहीं। मेरी बात को ध्यानपूर्वक सोचिये। कहा गया है :-

इबादत गुमरही अस्त।

(मौलाना रूम)

वेद पुराण मारें जीव की जान।

(राधास्वामी दयाल)

क्या आप समझते हैं कि जो गुरु नानक साहिब फरमा गये वह झूठ था। नहीं, जब हम में दोष आ जाते हैं अथवा अज्ञान से सत्य से गिर जाते हैं तब हमारे लिये सुमिरन ध्यान भजन का साधन है और नाम जपने का उपदेश किया जाता है। नाम के चक्कर में न पड़ना जो गुरु कहता है वही नाम है। इसकी बाणी और वचन नाम है। इस की बाणी और वचन नाम है, इस, की कही हुई बातों पर आचरण करना ही नाम का जपना है। ये याद रहे कि प्रत्येक व्यक्ति भिन्न २ दुःखों में ग्रहस्त है। इसलिए एक नाम सब के लिए लाभ दायक नहीं हो सकता। किसी को पेट में दर्द है, किसी को सर दर्द है, किसी को बीमारी है इन का इलाज भी भिन्न है इस लिए याद रखिये।

नाम रहे सतगुरु आधीना।

ये कहा गया है कि जो गुर कहे वो हित कर मानो और चित धर कर उन को बातों की ओर ध्यान दो, बस यही नाम है। यदि आप को कोई बात अच्छी ना लगे या ग़लत नज़र आये तो भी उस पर आचरण हो क्योंकि ये गुरु ही जानता है कि शिष्य की भलाई किस बात में है।

मेरे छोटे भाई राय साहिब सुरेन्द्र नाथ मेरी देखा देखी गुरु जी महाराज के पास उपस्थित हुए। उन्होंने उस को कहा "जीवन का अर्थ काम और काम का अर्थ जीवन है"। उसने इस पर आचरण किया। जीवन में बड़ी उन्नति की और आज वो वहां पहुंचा है जिस जगह दूसरे अन्य ढंग से मैं पहुंचा हूं। इस का ये भी अर्थ है कि गुरु त्रिकालदर्शी होता है वो गुप्त बातों को अच्छी तरह समझता है। शारी-रिक, पारिवारिक, मानसिक व अन्य दुःखों का ठीक उपाय जानता है।

आज जैसे मैंने ऊपर कहा मन के दुःखों के इलाज बताता हूं। मेरी बातों को सुनो! और अज्ञान की भक्ति और ग़लत गुरु बाद के जाल से बचो।

अब से खबरदार रहो भाई।
सतगुरु दीन्हा माल खजाना, राखो जुगत लगाई।
पाव रती घटने नहिं पावै, दिन दिन बढ़ै सवाई ।।
छिमा सील को अलफी, पहिनै जगुति लंगोट लगाई।
दया को टोपी सिर दर दैके, और अधिक बनि आई ।।
बस्तु पाय गाफिल मत रहना, निसि दिन करो कमाई।
घट के भीतर चोर लगतु है, बैठे घात लगाई ।।
तन बंदूक सुमति का सिंगरा, प्रीति का गज ठहकाई।
सुरति पलीता हर दम सुलगै, कस पर राख चढ़ाई ।।
बाहर वाला खडा सिपाही, ज्ञान गम्म अधिकाई।
साहेब कबीर आदि के अदली, हर दम देत जगाई ।।

माँ बच्चे की तोतली बोली को समझ जाती है। इसी प्रकार मैं भी आशा रखता हूं कि आप मेरे जैसे आदमी के शब्दों के अन्तरीय भाव को समझने का यत्न करेंगे।

हमारे मन में बेचैनी रहती है और हम अशान्त रहते हैं। मुझ को आप से अधिक तजुर्बा है। वो इस लिए कि प्रथम तो मैं आप अशान्त था दूसरे अशान्त व्याक्तियों से हर समय घिरा रहता हूं। इस अशान्ति का भी कोई कारण है और जब तक इस

के मूल कारण को नहीं जानता इलाज कैसे हो सकेगा ये भी जानना अवश्यक है कि अशान्ति क्या वस्तु है। सुनो! अशान्ति मन से उठने वाले ऐसे विचार हैं जिन में शक्ति नहीं होती। ऐसे विचार लड़खड़ाते ही अशान्ति पैदा कर देते हैं अथवा किसी वस्तु की मन में इच्छा होती है। किन्तु वह इच्छा प्रबल नहीं होती, इच्छा बदलती रहती है इस से मन अशान्त हो जाता है। इस का कारण क्या है? कारण यह है कि जिस पदार्थ से मन बनता है और विचार उठते हैं वह निर्बल है। इस का भी कारण है। हमारे शरीर के अन्तर प्रकाश और ताप हैं इनकी कमी ही मन और मन से उठने वाले विचारों की निर्बलता है। यही अशान्ति का हेतु है। आप देखते हैं जिस मां का बच्चा जितना अधिक रोगी है या निर्बल है वह उतना ही अधिक रोता है। जो बलवान है वह खुश रहता है। इसी प्रकार जो व्यक्ति शारीरिक रूप में बलवान है उस में उतना ही अधिक उत्साह है। आपने बड़े-बड़े कुत्तों को देखा होगा उनमें कितना उत्साह होता है। वह छाटे कुत्तों को जो उसे भौंकते हैं कब परवाह

करता है। आप अब मेरे भाव को समझ गये होंगे। हमारी अशान्ति जिसका दूसरा नाम दुःख है की उत्पत्ति हमारे आन्तरिक ताप और प्रकाश जिसका दूसरा नाम ब्रह्म है की कमी से होती है। मैं समझता हूं कि पचानवे फी सदी (९५ प्रतिशत) इन्सान रोने धोने में इसलिए लगे रहते हैं कि उनकी मानसिक शक्ति कम हो चुकी हैं इस कमी के तीन कारण हैं। पहला पाचन शक्ति में दोष। दूसरा वीर्य का आवश्यकता से अधिक खोना। तीसर अज्ञान। इसलिए अधिक अशान्ति उनके भाग्य में आती है जिन के ब्रह्मचर्य छोटी आयु में गिर गये, चाहे वह अपनी गलती से गिरे हों चाहे बचपन की शादी के कारण। जो अधिक कामी हैं उन का भी यही हाल है। इसलिए सज्जनों! दुनियां में सावधान रह कर जियो। इस बारे में कबीर साहिब ने संकेत रूप में अपने शब्दों में लंगोट का उल्लेख कर दिया। सन्त भी यहीं उपाय बताते हैं। बिना सच्चे नाम की समझ के क्या बन सकता है! अपने आप को सुदृढ़ बनाओ। न अशान्ति पैदा हो और न इसके इलाज की जरूरत पड़े। सत्संग से रहस्य को समझो। कबीर साहिब के

शब्दों में प्राय: आता है कि काम और परमार्थ का मेल नहीं। इस के अतिरिक्त यह भी कहा गया है :—

कामी कभी न गुरु भजे नाम गुरु का ले।

मगर प्रकट रूप में निर्बल व्यक्ति अधिकतर गुरुओं ही के पीछे लगे रहते हैं। उनको गुरु कैसे मिल सकता है! गुरु तो अचिन्त गति का नाम है, निर्भय और निर्वैर अवस्था का नाम गुरु है। वह अवस्था प्रत्येक व्यक्ति के अन्तर विद्यमान है। उस को ही परमसुख की अवस्था अथवा राधास्वामी कहते हैं। वह अवस्था किसी व्यक्ति का नाम नहीं क्या वह अवस्था किस को मिल सकती है? हां, उस को जिस के अन्तर ब्रह्म है, प्रकाश व ताप है, जिस में उत्साह है, जिस का मन बलवान है। जो अशान्त होते हैं वह सब शान्त पुरुष की तलाश में फिर रहे हैं। जैसा कि मैंने कहा वह अवस्था बाहिर नहीं तुम्हारे अन्तर है। बाहिर के सत्तगुरु ने तुम को इधर उधर का पाठ पढ़ा कर अन्त में उधर ही ले जाना है।

भाईयो! अपनी शक्ति को संभाल कर रखो। मन वचन कर्म को वश करना सीखो। अपनी सुरत

की शक्ति को जो बिखरी हुई है अपने अन्तर इक्ट्ठा करना और संभाल कर रखने का यत्न करना ही नाम का जपना है। यही सच्ची एकाग्रता है। यही उत्तमतम सुमिरन का साधन है। यह आवश्यक नहीं है कि ज़बान हिला कर कोई नाम जपा जाये। अपने ख्याल और सुरत को एक जगह करना और ठहरना और इसे परेशान होने से रोकना राधास्वामी नाम का सुमिरन करना है। इसी लिये कहा गया है :—

नाम के जपने में सब भूल गये।

सारी आयु राधास्वामी अथवा किसी और नाम की रट लगाने से बेड़ा पार न होगा। बेड़ा तो बलवान बनने से पार होगा जैसा कि ऊपर वर्णन किया गया है धारण ध्यान का आना अति आवश्यक है। जब शिष्य में ये हों तब उसके मार्ग दर्शन का ठीक समय होता है।

राधास्वामी का रूप क्या है ? एक बाहर है, एक अन्तर। एक समय था जब मुझे बाहर के गुरु के रूप से असीम प्रेम था। ये प्रेम अपने आप उसके आन्तरिक रूप का दर्शन करा देता है। कब ऐसा होता है ?

जब आप अपनी शक्ति को अपने मैं जैसा कि मैंने पहले कहा वापिस लाएंगे अथवा आप गगन मण्डल में जैसा कि वाणी में आया है घंस जाएंगे इस मार्ग में आने वालों के लिये विचार की शुद्धताई अनिवार्य है। अभ्यास के समय अन्तर में जो कुछ भले बुरे रूप आप को नज़र आते हैं ये सब आप के अपने ही विचारों का खेल है। विचार एक प्रकार का पदार्थ है जो रंग रूप और वज़न रखता है। ये न समझिये कि अभ्यास के समय अथवा स्वप्न में जो आपको गुरुओं के दर्शन होते हैं ये गुरु की कृपा है या वो आप चलकर आते हैं। अगर ऐसा प्रचार किया जाता है तो यों समझिये कि इन महात्माओं ने अज्ञान फैला रखा है। वास्तव में ये अपने विचारों का खेल है। जैसे जाग्रत में आप के दिमाग़ में विचार उठते रहते हैं वैसे ही स्वप्न अवस्था में चित्र दिखाएंगे। जिन को स्वप्न में साधु माहत्माओं के दर्शन होते हैं तो समझ लो कि उन की वृद्धि सुद्धताई की ओर जा रही है और वो उन्नति की ओर अग्रसर हैं। जिन को स्वप्न में बुरे दृश्य दिखाई देते हैं उनके विचारों में घृणा, द्वेष, मत्सर, घुसे हुये हैं। यदि वो दृढ़ता से धोरे २

अच्छाई की ओर प्रवृत रहें तो उनमें परिवर्तन आजाएगा मैं दयाल हूं (दयाल उसे कहते हैं जो दे और उस के बदले कुछ ना ले) मुझे अज्ञानी जीवों को देख कर अपने आप दया आती रहती है और उन के दुःखों का इलाज बतलाता रहता हूं और ये चाहता रहता हूं कि उनके विचार बुराई से हट कर भलाई की ओर आएं। साधारणतया सत्संगियों में सत्संग की कमी देखी गई है। इन्हें चाहिये कि गुरु के वचनों को सोचते और विचारते हुए अपने मन की वृत्तियों को, शुभ भावना रखते हुए एकाग्र करते जाएं।

आप किसी नाम में विश्वास रखिये वो राम नाम हो, राधास्वामी नाम हो, अथवा कोई और नाम हो इस में कोई अन्तर नहीं। यदि आप में उन्नति की इच्छा है अपने आप उस के सहारे उन्नति होती जाएगी।

मैं आप का भाई हूं मुझे आप की सेवा करनी है और विशेष कर उन की सेवा का इच्छुक हूं जो दुःखी और अशान्त हैं। मेरी भावना ये नहीं कि दूसरे गुरुओं के चेलों को अपने जाल में फंसा लूं। गुरु की अपार दया से मेरे भ्रम चले गए। मेरी दृष्टि

में द्वेष मिट गया किसीकी हानी मेरी दृष्टि में मेरी अपनी हानि बन गई। इन प्रस्थितियों में भला मैं किसी का क्या विरोध कर सकता हूं। मैं तो बंधा हुआ चाहे किसी समय मन भी ना माने आप लोगों की सेवा में लगा रहता हूं।

आप को नाम मिला है। आपने अपनी वृत्तियों को एकाग्र करना है प्रत्येक समय कानों में उंगलियां डाल कर ऐसा करते रहते हो, ये बच्चों का सा तरीका है और प्रारम्भिक साधन है। अच्छा! चले चलो। किसी प्रकार एकाग्रता प्राप्त कर लो ताकि समय पर आप को ज्ञान हो जाए, हम मानिके-कुल के अंश हैं फिर कानों में उंगलियां डालने की आवश्यकता शेष न रहेगी बुद्धि का निश्चयात्मिक होना ही नाम के असली सुमिरन का उद्देश्य है। बहुत थोड़े आदमी मेरी बात को समझेंगे। मन महान चंचल है उस की चंचलता को बस में लाने के लिए ही सत्संगियों को सुमिरन, ध्यान, और भजन का कार्य दिया जाता है। दाता दयाल महर्षि जी इसे छः महीने का कोर्स बताते थे। हज़ूर सांवले शाह, राय सालिगराम साहिब ढाई घड़ी का कोर्स अथवा सत्संग कहते थे। कुछ भी हो यह लम्बा कोर्स नहीं है। छोटा

सा है। किन्तु उन के लिये जिन में लग्न और एकाग्रता आ चुकी है। दूसरों के लिये टेढो खीर है।

सज्जनों! गुरु बनना भी एक कारागार की अवस्था है, बन्धन ही अवस्था का नाम है। इस लिए में इसे भी छोड़ बैठा। अब मैं कहां का रहने वाला हूं कबीर साहिब का शब्द सुनिये।

साधु ऐसा देश हमारा

वेद पुराण पार न पावें, कहन सुनन से नियारा।
जात पात वहां कुछ नाहिं. ऐसा देश हमारा॥
राजा रंक फकीर बादशाह, सब से कहूं पुकारा,
जो तुम चाहत परम परा पद बसो देश हमारा।
जो तुम आए झीनें रहियो तजो मति कुभारा,
ऐसो रहनि रहो रे गोरख सहज हि उतरे पारा।
सत नाम की महता भी है. साहेब के दरबारा,
बचना चाहो कठिन काल से गहो शब्द टक सारा।
कह कबीर सुनो हो गोरख सत नाम है सारा॥

सत नाम क्या है इस विषय में कल बताऊंगा आज मन के विषय में बात कर रहा हूं।

जो सत्संगी ये चाहते हैं कि वो मानसिक ब्रह्मचर्य ना रखें बल्कि विषय विकारों में मन को

लम्पट रखें उन के लिये शान्ति का प्राप्त करना कठिन है

इं ख्याल अस्तो महाल अस्तो जनूं

जो हम सब की वृत्तियों का स्रोत है वो आत्मा है। इसमें से मन की धारें निकलती रहती हैं। वो शक्ति लैम्प में तेल के सदृश है यदि उस शक्ति को हम विषय विकारों में खो दें फिर शान्ति कैसे ?

एक दिन एक नवयुवक मेरे पास कारखाने में आया जहां मैं काम करता हूं। मैं उस से बहुत नाराज़ हुआ कि वो मेरे काम के समय मेरे पास क्यों आया। उस ने बहुत विनीत भाव से उत्तर दिया कि मैं दुःखी हूं, अशान्त हूं इसलिये यहां आने के लिए विवश हूं। मैं ने कहा कि दो तीन वर्ष हुए तुम मेरे पास आए थे मैंने उन दिनों तुम को मानसिक ब्रह्मचर्य रखने के लिये राय दी थी। क्या उस पर आचरण किया ? ज्ञात होता है तुम ने मेरी राय पर अमल नहीं किया फिर मेरे पास आने का क्या अर्थ है ? जो व्यक्ति गुरु आज्ञा में नहीं रहता उसका कोई क्या इलाज करेगा।

जो बिना समझ बूझ के जीवन गुज़ारता है उस का हाल बुरा होता है अच्छा नहीं हो सकता। रामायण में लिखा है।

शिव द्रोहि मम दास कहावे,
वो सुप्ने मोहे नहीं भावे।

शिव नाम है ज्ञान का, गुरु का, इसलिए गुरु द्रोहि वो है जो प्रकृति के नियम की उलंघना करता है वो अति कुटिल है और प्रकृति के नियम को जान लेना ही सतगुरु या ज्ञान है। तुम्हारे भ्रम समाप्त क्यों नहीं होते ? क्योंकि वृत्ति स्थिर नहीं। तुम लोग राग भी गाते हो किन्तु शान्ति नहीं मिलती। शान्ति इसलिए नहीं मिलती कि तुम में स्थिरता नहीं। इसलिए सन्तों ने पतित व्यक्तियों को नाम दान दिया, नाम का जाप उन्हीं के लिए है जिनमें निर्बलता आ चुकी हो। सुमिरन ध्यान, भजन, भी उन्हीं के लिए है। मेरे भाव को समझने का यत्न कीजिए। इस बारे में शब्द सुनिये जो मेरे जीवन का कच्चा चिट्ठा है। दाता दयाल फरमाते हैं।

मैं पतित ठहरा तभी तू भी पतित पावन बना।
डबा भव सागर में मैं तब तू तरन तारन बना।

जो न होता जग में रावन, कैसे आते राम चन्द।
कंस ने प्रगट किया मथुरा में कृष्ना नन्द कंद।
जो सुखी हैं उन को तेरे नाम की हाजित नहीं।
जो भले हैं उन को तेरे काम की चाहत नहीं।
पाप जब मैंने किया तब तू हुआ प्रगट यहां।
जो न करता पाप तुझ को जानता कोई कहां।
पापियों को तारने वाले हमारा ध्यान कर,
करते हैं घृणा सब हम से हम को पापी जानकर,

पाप निर्बलता है और मेरे जैसे पापियों के लिये सन्त आते हैं।

बार बार कहता हूं कि अशान्ति का कारण ये है कि जिस शान्ति के भण्डार से हम बल ग्रहन करते हैं उस के अनुचित प्रयोग से उसमें कमी आ जाती है। ज्यों २ कमी आती जाएगी त्यों २ अशान्ति बढ़ती जाएगी, शक्ति का भण्डार क्या है ? जिस से मन बनता है। वो ऊपर के लोकों का प्रकाश है। इसलिए जब तक इन्सान उस प्रकाश में अपने आपको न ले जाएगा अशान्ति से छुटकारा पाना कठिन है यही अपने स्रोत को वापिस जाना कहलाता है क्यों कि सचमुच हमारा स्रोत प्रकाश से है। इस का विस्तार

पूर्वक प्रमाण जानने के लिए मेरी मनुष्य बनो पत्रिका व मेरे द्वारा लिखी गई अन्य पुस्तकें पढ़िये ।

गुरु प्रकाश का रूप है । प्रकाश ब्रह्म है । यही ईश्वर का रूप है जो निम्नलिखित वेद मन्त्रों से प्रकट होता है,

१. ओ३म् भूः, औ३म् भुवः, औ३म् स्वः, औ३म् महः, औ३म् जनः, औ३म् तपः, औ३म् सत्यम् गायत्री मन्त्र ।
२. ओ३म् भूर्भुवः स्वः, तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात् ।

असली गुरु फकीर चन्द नहीं है बल्कि वचन हैं जिसने तुम को शान्ति देनी है । वचन से जो सोजी (ज्ञान, अनुभव, चेतनता) मिलेगी वो तुमको शान्ति देगी। इसलिए किसी भ्रम में न पड़ना । गुरु इसलिए आते हैं कि इन की संगत द्वारा हमारा तुम्हारा कल्याण हो और कल्याण रहस्य अथवा भेद के मिलने से होता है जो सत्संग से मिलता है ।

हम आये आये आये हैं
तुम को दुःखी देख आँखों से मन में दया समाई ।
दया रूप धर प्रकटे जग में दया यहाँ ले आई ॥

सूरज दया का गगन प्रकाशा, किरणें दगा की धारा ।
दया सिंध उमगा और बाढ़ा दया भाव विस्तारा ।।
सुर नर मुनि की यह है रीति लग स्वार्थ वह करें प्रीती ।
हम में नहीं है स्वार्थ किंचित लख लख करो प्रतीति ।।
उदर निमित्त सब धारें भेसा जोगी जती उदासी ।
मागें भीख ज्ञान की गम नहीं तुम उनके विश्वासी ।।
भूल भ्रम तज कर सत्संगत हिये की आंख खलाओ ।
राधा स्वामी रूप निरख कर, दया से काम बनाओ ।।

मेरे पास कोई कुछ समय बाद आकर यदि शिकायत करे कि उस का दुःख दूर नहीं हुआ तो मैं साफ साफ उस से कह देता हूं कि उस ने मेरी बात पर आचरण नहीं किया । उसे यह अवगुण मानना ही पड़ता है क्योंकि मेरी बातों में सच्चाई होती है ।

आवश्यकता से अधिक कामनायें, वासनायें इच्छायें हमारे दुःख का हेतु बन जाती हैं जैसा कि मैं ने पहिले कहा । हमारे चित की वृत्ति के अन्तर प्रबल कामनाओं का उत्पन्न होते रहना हमारी सुरत की शक्ति को परेशान करता रहता है और अशान्ति लाता है । ब्रह्मचर्य की गिरावट भी अधिक कामनाओं

को पैदा करने का कारण है। इसलिए होशियार हो कर इस दुनियां में रहिये। पुराने सत्संगी जो इस समय तक सुख को प्राप्त करने में असफल हैं वह अपने अन्तर दृष्टि डालें। उन को आप ही असफलता का कारण मिल जायेगा। इस के अतिरिक्त सत्संगियों में स्पष्ट वर्णन शैली से भी तो काम नहीं लिया जाता। इस से यथार्थ चित्र आंखों के सामने नहीं आता है।

नाम के साथ पूर्ण पुरुष का सत्संग अनिवार्य है। वहां दो चीज़ें काम करती हैं। ताड़ मार और सत्संग जो अच्छे (Standard) आदर्श की पाठशालायें हैं वहां भी यह दो चीज़ें (पढ़ाई और ताड़मार) देखी गई हैं। सत्संग घर भी एक प्रकार की पाठशाला है किन्तु यह पाठशालायें केवल अधिकारियों के लिए खोली गई हैं न कि अनाधिकारी व्यक्तियों के लिए। कोई माने या न माने और जो इच्छा हो करें किन्तु ठीक बात यही है जो मैं ने कही है। यही कारण है कि उच्च कोटि के संत और फकीर अपने में कोई न कोई दोष लगा लेते हैं ताकि उन के दोष देख कर सर्वसाधारण अर्थात अनाधिकारी उनके से विमुख

होकर उन की संगत से परहेज़ करें। इसके अतिरिक्त फकीर लोगों का भाव देखते हैं न कि उनको आर्थिक दशा। मेरा वेतन आरम्भ में केवल पन्दरह रुपये महीना था और मैं एक निर्धन सिपाही का लड़का था किन्तु दाता दयाल जी महाराज ने मुझे छाती से लगाया। यदि सन्त या फकीर किसी व्यक्ति को अनाधिकारी समझते हैं तो उसे अपने विश्वास के मंडल में लाने से दूर ही रखते हैं। इस सिलसिला में ने एक बार दाता दयाल जी महाराज की अन उपस्थिति में उन की फाइलों को देखना शुरु किया। उन में बड़े-बड़े आदमियों के पत्र लग रहे थे जिन पर (Refused) इन्कारी लिखा हुआ था। दाता जी से मैं ने पूछा यह क्या बात हैं ? उन्होंने फरमाया फकीर !

यह लोग चाहे अनाधिकारी हैं किन्तु धन से ईश्वर को मोल लेना चाहते हैं इस लिए इनको नाम से क्या लाभ हो सकता है।

एक बार जब मैं किसी स्टेशन पर स्टेशन मास्टर था दाता दयाल जी महाराज मेरे यहां पधारे उस शहर में एक धनी व्यक्ति श्री रामस्वरूप भी

रहता था। वह चाहता था कि दाता दयाल उस के यहां खाना खायें। इस लिए इस बारे में मैं ने दाता दयाल जी महाराज को कहा। बोले फकीर! तेरे घर में मेरे लिए टुकड़ा नहीं रहा? मैं लज्जित हो गया। वह व्यक्ति भी मेरे पास आ निकला। दाता ने उस से कहा :—

हम फकीर आप अमीर हमारा आप का क्या मेल। अभिप्राय ये है कि फकीर बहुत सचेत होते हैं। भाव ही को देखते हैं। मां कितनी ही गन्दी क्यों न हो बच्चा उसकी तरफ आकर्षित होता है क्योंकि भाव का प्रश्न है। मैं मानवता का अनुयाई हूं। न मुझे मज़हबों से सम्बन्ध है और न किसी बात से। रोना धोना प्रेम और अज्ञान के कारण है। ये भावुक है। समझ आते ही गुम्म हो जाता है। एक बार मेरे मित्र पुरुषोत्तम दास जी ने जब हम बसरा बग़दाद में थे दाता दयाल जी महाराज को लिखा कि फकीर जैसा प्रेम हमको भी प्रदान करें। क्योंकि वह प्रेम में रोता है ऐसा प्रेम हमें भी दें। उन्होंने उत्तर दिया।

जिन के भाग्य में रोना है वो रोयेगें तुम क्यों ऐसी इच्छा करते हो।

जैसे कहा गया कि जो अपनी शक्ति, मानसिक शक्ति, प्रकाश अथवा ब्रह्म को व्यर्थ खोते हैं अथवा बाहिर मुखि हो जाते हैं अशान्त रहते हैं वही लोग शान्ति को फिर से प्राप्त करने के लिये ढूंढते फिरते हैं और जब उन्हें अभ्यास की ओर लाया जाता है तो उन को एक भ्रम सताना रहता है। वो भ्रम ये है कि किसी को उस के अभ्यास के समय किसी रंग का प्रकाश दिखाई देता है, किसी को किसी रंग का। ये भिन्न २ अवस्थाएं उन को अनेक प्रकार के भ्रमों में डालती रहती हैं। इस बारे में मैं ये बताना चाहता हूं कि वो प्रकाश हमारा अपना ही प्रकाश है और उसमें उत्पन्न होने वाले रंग भिन्न २ प्रकार की भावनाओं और इच्छाओं का परिणाम हैं। अर्थात उस प्रकाश में अपनी भावनाओं का प्रतिबिम्ब पड़ने से रंगों में अन्तर दिखाई देता है। इसलिये यह भ्रम के कारण न होनी शाहिए। जिन में सांसारिक इच्छाएं प्रबल हैं वो लाख कोशिश करें सफेद रंग के प्रकाश में नहीं जा सकते।

कृषक जी ! आप ने संतमत का काम करना है इसलिये भेद दे रहा हूं। ज्यों २ वासनाओं, कामनाओं, इच्छाओं में सूक्ष्मता व शुद्धता आती जाएगी आप के आन्तरिक रंगों में परिवर्तन अ ता जाएगा, इसे ध्यान में रखें।

अधिक परिश्रम से उस वस्तु को जिस का मैं वर्णन कर रहा हूं प्राप्त करना कोई अर्थ नहीं रखता। वासनाओं को ठीक करना उत्तमतर है। उन को उचित ढंग से उचित सीमा तक राकने का यत्न करो और ये रोकथाम गुरु द्वारा हो। वो जानते हैं कि कौन सी वासना कब और कितनी सीमा तक रोकनी उचित है। यदि वासना प्रबल है तो हो सकता है कि गुरु भी उसके रोकने की राय न दे बल्कि उस को भोग लेने का उपदेश करें। मेरी अपनी दशा इस बात को अच्छी तरह प्रकट करती है। मैं बारह वर्ष बसरा बग़दाद रहा, भाव में आकर स्त्री से सम्बन्ध तोड़ लिया था। दाता दयाल जी महाराज जानन हार थे, आदेश हुआ कि फकीर ! अभ्यास छोड़ दो। अब साधन नहीं करना सन्तान पैदा करो। मैंने प्रार्थना की कि हजूर ! मैं झंजट में नहीं फसना

चाहता। उन्होंने फरमाया कि तुम ने अपनी इच्छाओं को हठपूर्वक रोका हुआ है। मुक्ति प्राप्त ना होगी ये भावना फिर उभरेगी। इसलिये आज्ञा का पालन करना पड़ा और सन्तान उत्पन्न की।

हर व्यक्ति की भावनाएं और इच्छायें भिन्न भिन्न हैं। इसलिये अन्तर के दृश्य जैसा कि मैंने पहले कहा भिन्न २ होंगे। ज्यों २ ये भावनाएं समाप्त हो जाएंगी फिर "सेत संहासन छत्र विराजे" का दृश्य नज़र आऐगा। मैं कहता हूं कि प्रत्येक व्यक्ति आप ब्रह्म का रूप है और यदि सच पूछो तो ब्रह्म से भी ऊंचा है। इस विषय में इन्सान के बारे में कहा गया है :—

पहुंचा उस जा कि फरिश्तों का भी मकदूर ना था।

हमारा तुम्हारा रूप प्रकाश है। जो वस्तु प्रकाश में रहती है, प्रकाश को देखती है वो सुरत है। जब वो प्रकाश स्थूल प्रकृति में प्रवेश करता है मन में संकल्प उत्पन्न होता है। हम उसी समय भ्रम में पड़ जाते हैं फिर हमारी विरह पूर्ण प्रार्थना सतगुरु को उत्पन्न करती है जो हम को फिर से सत्य की ओर ले जाता है।

मैं एक बात कहनी भूल गया वो ये है कि हम चाहते हैं कि हमारी वृत्तियां बुरी कामनाओं की ओर न जाएं किन्तु फिर भी जाती हैं। इस में क्या भेद है ? सुनो ! जो व्यक्ति किसी प्रकार की वृत्ति वाले व्यक्ति के पास बैठता है। संग दोष के नियमानुसार इस का प्रभाव उस पर पड़ता है। इसलिए भलों की संगत करो। तभी तो मैं महात्माओं अथवा उन पुरुष को जो सत्संग कराते हैं कहता रहता हूं कि अपनी आन्तरिक रहनी में छल कपट घृणा, द्वेष, मत्सर, स्वार्थ भावना से दूर रहो अन्यथा तुम्हारे सत्संग में आने वाले तुम्हारे ही जैसी रहनी वाले बन जाएंगे और उन के जीवन शुद्ध पवित्र न हो सकेंगे। इस विषय में एक उदाहरण देता हूं सुनिये।

एक बार जब मैं फिरोज़पुर में था लोहड़ी के दिन दो चार व्यक्ति मेरे पास आये और मुझे व्याख्यान देने की प्रार्थना की। क्या व्याख्यान ? ये कि उनके बच्चे आपस में लड़ते हैं उन को समझाऊं बुझाऊं जिससे वो आगे के लिए आपस में लड़ाई झगड़ा न करें। पहले तो मैंने इन्कार किया फिर उन लोगों से दो एक बातें की और उनको बताया कि जब तुम

लड़ते झगड़ते हो और एक दूसरे का विरोध करने के लिए उद्यत रहते हो तो कैसे हो सकता है कि तुम्हारी सन्तान तुम से यह गुण ग्रहण न करे और यदि तुम एक दूसरे की निन्दा करते हो तो बच्चे भी स्वाभाविक ऐसा करेंगे। मेरी इन बातों को सुन कर वह चुप हो गये और मुझे फिर तंग नहीं किया कि मैं व्याख्यान दूं। यह ठीक और सच्ची बातें हैं। इन से हर व्यक्ति लाभ उठा सकता है। यह सत्संग ही तो है। सत्संग के और कोई पर व बाज़ू तो नहीं होते।

दायरा सब का बढ़ सकता है चाहे वह चोर हो, डाकू हो, सनातनी हो, राधास्वामी हो अथवा किसी और सम्प्रदाय का। इस संसार में लाखों धर्म बने और टूटे। आवश्यकता तो इतनी है कि हमारे जीवन सुधर जायें, हम बेचिन्त, बेफिक्र और सुखी रह सकें। मैं समझता हूं कि जो सोना कानों के लिए दुःखदायी हो इसके पहनने की क्या आवश्यकता है। इसी प्रकार जहां सत्संग में घृणा है वहां जाने की क्या आवश्यकता है। ऐसे पुरुषों की संगत का आदेश है जो आप निर्मल हो चुके हैं या इस मार्ग में हैं। जो बुराइयों

में फंसे हैं उन के पास मत जाइये अन्यथा संगदोष का नियम आप को ले डूबेगा।

इस ख्याल से कि संत कोई पंथ और सम्प्रदाय नहीं बनाते, मैं मानवता पर बल देता हूं कि इन्सान बनो। यदि इन्सान सचमुच ही इन्सान बन जाये तो फिर क्या कहना है। संसार नर्क न बने। हम सब आपस में भाई भाई हैं, हिन्दुपने, सिखपने, इसाईपने, मुसलमानपने से पक्षपात उभर उभर का संसार में व्याकुलता उत्पन्न करता है इस में मज़हबों का कसूर नहीं बल्कि मज़हब वालों का दोष है।

यूं तो होने को फरिश्ते भी हैं, शैतान भी हैं।
काश होता कोई इन्सान भी इन्सानों में।

इसी कारण स्वतन्त्र पुरुष की संगत से सम्भव नहीं कि आप में स्वतन्त्रता न आवे। मेरे अपने भ्रम टूटने को न आते थे। दाता दयाल जी महाराज की संगत ने अपने आप तोड़ दिये। एक बार मैंने एक लेख लिखा जिस में संकीर्णता थी। दाता दयाल जी महाराज को दिखाया उन्होंने सब काट दिया और कहा :—

Have Reverence for the past souls.

Have Reverence for the present day men

अर्थात पूर्वजों की प्रतिष्ठा करो और जो वर्तमान इन्सान हैं उनका मान करो। वर्तमान सत्संगियों की सेवा करो प्रेम भाव बढ़ाओ संत्सगियों का आपस में एक दूसरे की सहायता करना आवश्यक है। सब की सेवा करो मैं ही सत्संगियों के अन्तर विराजमान हूं और घट घट का बासी हूं। यदि किसी गुरु की सेवा करनी है तो वह सत्संगी हैं जिन को आप को सेबा की आवश्यकता है। मेरे ही रूप को भिन्न २ रूपों में देखते हुये इन सत्संगियों की सेवा करो।

सब को राधास्वामी।
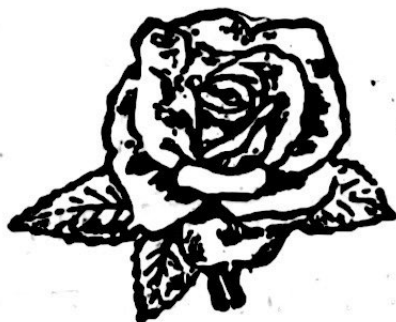
सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज स्थान दिल्ली

प्रातः १५ अक्तूबर १९५६ ई०

ये विचार ग़लत है कि प्रेम चाहिये। जिस समय प्यास लगती है उस समय प्रेम चाहिये अथवा पानी। मैं भी भावुक हूं। प्रेम कीं जगह सुख और शान्ति मांगनी चाहिये। गुरु प्रेम किसी पूर्ण पुरुष का सत्संग और उस के वचनों को गुनना है। ये प्रारम्भक अवस्था है :—

जतन बिन मिरगन खेत उजाड़े।
पांच मिरग पच्चीस मिरगनी, तिन में तीन चितारे।
अपने अपने रस के भोगी, चुगते न्यारे न्यारे॥
पांच डार सूटन की आई, उतरे खेत मंझारे।
हा हा करत बाल ले भागे, टेरि रहे रखवारे॥
सुनियो रे हम कहत सबन को, ऊंचे हांक हंकारे।
यह नर देह बहुरि नहिं पैहो, काहे न रहत संभारे।
तन कर खेती मन कर बाड़ी, मूल सुरत रखवारे।

ज्ञान बान और ध्यान धनुष करि, क्यो नहिं लेत संघारे।
सार सबद बन्दूख सुरत धरि, मारे तीन चितारे।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, उबरे खेत तिहारे॥

संसार में प्रत्येक व्यक्ति को कोई ना कोई धुन है। कबीर साहिब को धुन थी। इन्सान को किसी वस्तु की तलाश है उसे प्राप्त करने के लिये जाने या न जाने वो इधर खिचा हुआ चला जा रहा है। मुझे भी तलाश थी ये कि मैं कौन हूं। मुझे पता नहीं कि कबीर साहिब, स्वामी जी, दाता दयाल अथवा अन्य महापुरुष कहां पहूंचे। हम उन की बाणियां पढ़ते हैं और अपने भाव के अनुसार उनका अर्थ लगाते हैं। मैं वहां पहुंचा जिस जगह का राधास्वामी दयाल ने उल्लेख किया अचिन्तपना बेग़मपना आदि आदि। उसी स्थान पर ले जाने अथवा उसी आधार पर मैं ने इस दुशहरे का सत्संग शुरू किया। अच्छा ! यहां से चल कर मैं वहां पहुंचा और जब मुझे होश आई मैंने भी अपने आप को वहीं पाया जहां से चला था। अभिप्राय ये है कि मैं कहीं भी नहीं पहूंचा जो पहले था वही हो गया। ये मेरा अपना अनुभव है। मुझे दूसरों का पता नहीं कि वो कहां पहुंचे। न ही मुझे

इस से अब अधिक वास्ता है। इसको समझना सरल नहीं है। मैं इसे और अधिक विस्तार से बताता हूं। सुनो ! पहले बचपन में मैं बेफिक्र था। उस समय न चिन्ता थी न ग़म न फिक्र एक खुशी का जीवन था। ये अवस्था क्यों थी ? उस समय मुझे इस का पता नहीं था। हां अब मुझे पता है कि मैं बेग़म कैसे हो गया। आशा नहीं रही, इच्छा जाती रही। कोई अपना नहीं, न कोई पराया है। फिर आशा और इच्छा क्यों, आशा और इच्छा ने तो प्रायापन पैदा किया। प्रायापन जाता रहा। इसलिये आशा और इच्छा भी समाप्त हो गई। इस से स्पष्ट और क्या कहूं।

गमे दुनियां न है मुझ को न दुनियां से किनारा है।
न लेना है न देना हैं न हीला है न चारा है।
न शाही का मैं शैदा[1] हूं गदाई[2] का न ग़म मुझ को।
जो मिल जाये वही अच्छा यही मेरा गुज़ारा है।
न अपने से मुहब्बत है न नफरत ग़ैर से मुझ को,
सभी हैं रूप प्यारे के यही मेरा नज़ारा है,
न कुफर[1] इसलाम से मतलब न मिल्लत[2] से ग़रज़ मुझको
न हिन्दू गबरो मुसलिम हूं सबों से राह न्यारा है।

---

1. नस्तिकपना 2. मज़हब।

मैं ने अपने जीवन के विषय में बताया कि मुझे सनक (Mania) थी ये सनक मुझ पर ही सवार नहीं हुई, स्वामी जी, कबीर साहिब, ऋषियों मुनियों, और दूसरे महापुरुषों को भी ये सनक सुई। इस सनक के बाद मैं उस अचिन्त गति या बेफिक्री की अवस्था में पहुंचा जिस को मैं पहले वर्णन कर चुका हूं। इस अवस्था तक पहुंचने के लिये सांसारिक जीवन की जो जो बाधाएं और जो २ इन के उपाय होते हैं, इन का वर्णन पहले सत्संगों में कर चुका। अब इस अवस्था का कुछ वर्णन करता हूं जहां पहुंच कर छोटे बच्चे की सी हालत हो जाती है।

बाल रूप होये जग को छींके

स्वामी जी

बच्चे के विचार में न कोई अपना है न पराया। न वो किसी ईश्वर को जानता है, न उस का कोई धर्म और पंथ है, न उसे चेला और गुरुपने की परवाह होती है। यही अवस्था अब मेरी हुई है। मैं अब न किसी पंथ का पंथाई, न किसी मज़हब का शैदाई न मेरी कोई खलकत न कोई खुदाई।

अब ये अवस्था कैसे आई ? ये अवस्था सुरत शब्द योग से आई। आप शायद ये कहें कि मैं क्या कह रहा हूं। मैं जो कह रहा हूं सच १ और प्रमाण सहित कह रहा हूं। अब नीचे आकर कहता हूं हमारा जो मन है इस में ख्याल, विचार, भाव, तरंगें क्यों उठती हैं ? सुनिये।

प्रकाश जब स्थूल प्रकृति में प्रवेश करता है तो एक प्रकार की चेतनता (शारीरिक अथवा मानसिक) का खेल हर अस्तित्व में पैदा हो जाता है। इस की हकीकत को जानना है और अपने आप को इसी प्रकाश में, जिसे दुनियां ब्रह्म समझकर पूजती है, सुमिरन, ध्यान, और भजन द्वारा ले जाना है। मैं ने भी अपने आप को इसी साधन से शरीर से निकाल कर वहां तक पहुंचाया। आप प्रकाश का रूप हो कर उस प्रकाश, ब्रह्म, नूर, रोशनी, ईश्वर को देखा। हमारे शास्त्र सनातन से इस प्रकाश में जाने का उपदेश करते हैं। प्राणायाम का मन्त्र भी इस बात का प्रमाण है। वह सत्य जिस का उल्लेख इस प्राणायाम मन्त्र में आता है सफेद रंग का प्रकाश है। मैं ने इसे आप प्रकाश रूप हो कर वहां रह कर खूब

देखा। मानसिक शक्ति उस साधन से बढ़ती है। ऐसा करने से साधक अपने अन्तर प्रकाश से परे के लोकों से सम्बन्ध पैदा कर लेता है। मगर याद रखिये यह अवस्था भी परिवर्तन शील है। यह नित्य नहीं यहां तक पहुंच जाने पर भी आवागवन का चक्र समाप्त नहीं होता, यह सब मेरा अनुभव है। सुनी सुनाई बात नहीं कह रहा। तो इसका यह अर्थ हुआ कि इस साधन द्वारा भी अचिन्तपना अथवा बेग़मपना भाग्य में नहीं आता। यह तो प्रकाश के विषय में कहा। इसके अतिरिक्त मैं समय से शब्द जिसे अनहद शब्द बोलते हैं को सुनता रहा। जब तक सुनता रहा आनन्द लेता रहा। यह ठीक है सिद्धियां शक्तियां भी आ गई, मस्ती की दशा छा गई मगर इस साधन से भी पूर्ण रूप से अचिन्तपना न मिला।

तो आप अब पूछ सकते हैं कि यह गति फिर कैसे मिलेगी ? क्या यह पूर्णरूप से प्रकाश और शब्द में तय होने से भी नहीं मिल सकती ? मैं उत्तर देता हूं कि यह अवस्था ऐसे व्यक्ति के भाग्य में आती है जिस में अचिन्त पने को प्राप्त करने की सच्चो चाह हो। सज्जनों ! मुझे यह अवस्था उस समय मिली

जब मुझे यह अनुभव हो गया कि वास्तव में मैं कौन हूं। मेरी सत्ता क्या है ? भाइयो ! यह अवस्था सुरत शब्द योग के अभ्यास के बाद मिलती है शर्त यह है कि किसी पूर्ण और निम्वार्थ इन्सान का सत्संग मिले।

सुरत शब्द दौ अनुभवरूप, तू तो पड़ा भ्रम के कूपा।
(स्वामी जी)

यह अवस्था तुम को वह गुरु नहीं दे सकते जिन के अपने पर्दे नहीं खुले और जो इस अवस्था से आप वञ्चित है।

पूरे गुरु से अगर आप को संस्कार मिला है तो उस में ज़बरदस्त शक्ति है कि तुम को इस अवस्था तक पहुंचा दे। इस में संशय नहीं कि देर लग जाये। आप में भी इस अवस्था को प्राप्त करने की चाह होनी जरूरी है। सुरत जब शब्द में लय होती हुई ऊपर की ओर चलती है तो अशब्द गति तक पहुंच जाती है। प्रकाश भी गुम, तब जा कर अनुभव होता है कि अपनी क्या हकीकत है।

जाप मरे अजपा मरे, आनन्द भी मर जाय।
सुरत समानी शब्द में ताको काल न खाये।

जिस प्रकार मैं चेतन का एक बुलबुला हूं उसी प्रकार आप सब भी चेतन के बुलबुले हैं। शब्द के प्रकट होने के कारण देह और प्रकाश के मेल से चेतन शक्ति (सुरत) पैदा होती है। इसकी उत्पत्ति को समझना हैं और यह समझ सुरत शब्द योग के अभ्यास से प्राप्त होगी। तब कहीं पर्दे खुलेंगे और आप शान्ति अथवा अचिन्तपने की अवस्था को प्राप्त कर सकते हैं।

मुझ को शान्ति अनुभव रूपी सत्तगुरु (ज्ञान) ने दी न कि दाता दयाल जी महाराज ने। संस्कार तो उन का था। इसलिये कहता हूं कि शान्ति उन्हों ने दी। कहते हैं कि गुरु बहुत कुछ देता है और कुछ भी नहीं देता। इस बात की व्याख्या की आवश्यकता है सुनिये :—

बच्चा उत्पन्न होता है। तुम ने आप बोल बोल-कर उस को बोलना सिखाया। चल चल कर उस को चलना सिखाया। आप क्रियात्मक जोवन में आ आकर अपने ही भाव बच्चे में प्रवेश कर गये। अब यदि बच्चा यह कहे कि उस ने चलना बोलना और

ज्ञान अपने आप सीखे हैं तो यह कहना इस का एक दृष्टिकोण से ग़लत है और एक दृष्टिकोण से ठीक है।

अज्ञानी भिखारी बन कर सारी आयु गुरु के दरबार में मांग मांग कर जीवन गुज़ारते हैं। भाइयो! गुरु के पाउ फहुत कुछ है लेना सीखो! अपने पावों पर खड़े हो जाओ और बस। वह तो मां के सदृश आप से हित करते हैं। आप को जीने का ढंग बतलाते हैं। हां, उन के लिए फूंक मार कर घुट दरबार ले जाने का काम कठिन है। जहां ऐसा प्रचार है वहां गुरु वाद का झूठा जाल बिछा हुआ समझिये। यदि गुरु की आपने कुछ परख करनी है तो उस की रहनी देखये।

ऐ संसार के महात्माओ! यदि सचमुच आप ने कुछ दया करनी है तो जीवों को जीवन में खुशी, बेफिक्री और अन्त में निर्वाण का भाव रख कर समझाओ बुझाओ। जिस तरह माता के दिल में यह विचार होता है कि इस का बच्चा योग्य बन जाये इसी प्रकार आप के दिल में यह विचार होना चाहिये

कि आप की संगत में आने वालों के जीवन आनन्द मय बन जायें। इस से अधिक क्या कहा जाये यदि आप के शिष्य योग्य निकलेंगे तो लोग आप की प्रशंसा करेंगे अन्यथा पंथ को बदनाम करेंगे।

गुरु की रहनी गुरु का कार्य है। मैं गुरु मत का सच्चा अनुयायी हूं किन्तु बातों को हेरा फेरी से नहीं करना चाहता। जीव भोले भाले हैं। भय है ऐसा स्पष्ट वर्णन न करने से सत्य से अनभिज्ञ रहेंगे।

एक बार मैं हज़ूर बाबा हरचरण सिंह जी के साथ ब्यास में था। मैंने सत्संगियों को देखा। मेरी आंखों से छम छम अश्रु आने लगे। बाबा जी से कहा :—

"यह सत्संगी सत्तपुरुष के बच्चे हैं और शेर का दर्जा रखते हैं यह अपने अज्ञान, भ्रम और संशय के कारण आपके दर घर भीग मांग रहे हैं। यदि प्रकृति ने आप को अवसर दिया है तो इनको शेर बना दीजिये। यह सदैव भिखारी ही न बने रहे। मुझे इन के साथ इस लिए हित है कि किसो समय मैं आप भिखारी रहा हूं।"

मुझे जीवन में मान बड़ाई की आवश्यकता न थी। यही कारण है कि मुझे सुरत शब्द योग से ज्ञान मिला जिस से मैं मालामाल हो गया। इच्छओं की जड़ ही कट गई। संस्कार (नाम) देने वाले (गुरु) को को चाहिये कि सोच समझ कर ऐसा करें। यदि वह आप जीवन मुक्त अवस्था में रहता है तो वह यह काम करने का अधिकार रखता है अन्यथा वह इस काम से अज्ञानता फैलायेगा अधिक क्या कहा जाये ! ठीक और सच्ची बात तो यह है जिस प्रकार का पिता है जैसे उसके विचार अथवा भाव है वही तो बच्चे के रूप में संसार में आयेंगे। यह नाम दान देना भी एक प्रकार का बच्चा पैदा करने का कार्य है बल्कि नया जीवन देना है। यह नहीं हो सकता कि पिता का प्रभाव उस के रत्क और वीर्य के द्वारा उसकी सन्तान में न पहुंचे। माना कि संगत के भाव से परिवर्तन आ जाता है किन्तु जड़ का जान प्रायः कठिन बात है। इसी प्रकार गुरु का दिया हुआ संस्कार ही फल लाता है। उसका क्रियात्मक होना अनिवार्य है।

अब मैं हज़ूर सांवले शाह (बाबा सासन सिंह जी महाराज) द्वारा दीक्षित हुये सत्संगियों को कहता हूं कि गुरु के नाम को रोशन करो। आप की योग्यता पर आप के गुरु की प्रशंसा होगी अन्यथा उन्हें भी बुरा भला कहेंगे।

आनन्ददयाल ! मैंने तुमको दीक्षित किया था। तुम्हारे जिम्मे जनत्ता की सेवा का काम दिये जा रहा हूं। होशियारी और लग्न से करना। कोई यह न कहे कि तुम अयोग्य फकीर के चेले हो। साव-धानता और समझ बूझ से काम करना। मैं चाहता हूं कि तुम्हारा आचार विहार एक आदर्श बने।

मैं गुरु के नाम को बट्टा नहीं लगाना चाहता। यही कारण है कि मैं नाम देने से परहेज़ करता रहता हूं। ज़बरदस्ती ले जाए तो अलग बात है मेरा सत्संग ही असली नाम है।

दोबारा फिर कहता हूं कि यह सुख और शान्ति उस को मिलेंगे जिसको पूर्ण गुरु मिल चुका है। वही पूरी समझ और पूरा भेद पा सकता है।

गुरु ने अब दीन्हा भेद अगम का।
सुरत चली तज देश भरम का ॥१॥

बल पाया अब बिरह मरम का।
भटकन छूटा दैरो हरम का ॥२॥
बर्षन लागा मेघ करम का।
सशंय भागा जनम मरन का ॥३॥
तोड़ दिया सब जाल निगम का।
सुख पाया अब हम दम दम का ॥४॥
फल पाया जाज हम सम दम का।
भंवर हुआ मन सेत पदम का ॥५॥
फूंक दिया घग लाज शरम का।
काटा फंदा नेम धरम का ॥६॥
ज्ञान घ्यान वाचक हम छोड़ा।
भक्ति भाव का पहिना जोड़ा ॥७॥
भक्ति भाव का महिमा भारी।
जानें गे कोई संत विचारी ॥८॥
सत्तनाम सतपुरुष अपारा।
चौथे माँहि करें दरबारा ॥९॥
सुरत शब्द मरग कोई पावे।
सो हसो चढ़ लोक सिधावे ॥१०॥
सो मारग अब राधास्वामी गई।
कोई कोई प्रेम भक्ति से पाई ॥११॥

अगर मेरी बातें सत्संगियों के मनों में भ्रम और शंकाये रहने दें तो मैं समझूंगा कि कमी मुझ में या मेरी बातों में है न कि सत्संगियों में।

सतगुरु मारा खेंच कर शब्द सुरंगी बान।
मेरा मारा जो जिये फिर न गहूं कमान।

कही हुई बात अगर दूसरे को मानने पर विवश न करे तो बात कहनी ही बेअर्थ है। अच्छा है कि बात उसी समय की जाये जब वह प्रभावित हो अन्यथा इन्सान चुप रहे। राधास्वामी दयाल लिखते हैं :—

भक्ति सुनाई सब से न्यारी।

वह कौन सी भक्ति है जिसकी ओर उन्होंने संकेत किया? सुरत शब्द योग से ज्ञान हासिल होता है। इन्सान को तब पता लग जाता है कि वह वास्तव में है क्या वस्तु। फिर वह समझता है कि वह परमतत्व से निकला हुआ है। उसे हर समय यह ध्यान रहता है :—

मैं हूं सत्तपुरुष का दासा।
इस जग में देखन आया तमाशा।

यह विश्वास व निश्चय कि मैं कौन हूं यही न्यारी भक्ति है जिस का वर्णन वाणी में आता है।

फिर इन्सान दुनियां में रहता हुआ जीवन्मुक्त अवस्था में विचरता है। उस समय वो न हिन्दु रहता है, न मुसलमान, न ईसाई, न सिख, न ये न वो, बल्कि सब तमाशा ही तमाशा देखता है और मरने के बाद कहां जाता है ? वापिस अपने स्त्रोत्र को चला जाता है जिस स्थान का वर्णन कहने व सुनने से परे है।

लब खुले और बन्द हुए यह राज़े ज़िन्दगानी मिला !

आवागवन ज्ञान द्वारा छूटता है न कि केवल बातों से। रहस्य का मिल जाना ही गुरु का मिल जाना है।

यदि आप को नाम दान देने वाला आप विदेह गति में है तो विश्वास रखिये आप भी अधूरे नहीं रह सकते। समय आने पर अवश्य विदेह गति को प्राप्त करोगे। बानी इस को सिद्ध करती है।

सन्त डारिया बीज धरती में को समरथ जो जार सके।

सन्तों का भाव जीवों का सुधार करना है। यह काम राजनीति वाले नहीं कर सकते। क्यों ? क्योंकि इनके मूल तक पहुंचना अर्थ रखता है।

यह अचिन्तपना जिसके विषय में मैं सत्संग के आरम्भ से बता रहा हूं तब तक न मिलेगा जब तक

प्रेम की भी इच्छा मन में शेष है। प्रेम किसी दूसरे से हुआ करता है। प्रेम की इच्छा का मन में शेष रखना द्वैत को मानना है, दुई में हकीकत नहीं मिलती। गुरु गुरु कहने से आनन्द मिलेगा मगर पूर्ण शान्ति ना मिलेगी। अनुभव ही शान्ति और अचिन्तपना देगा। याद रखो।

नियम ये है कि जो अधिक पतित है उस को मंजल तक पहुंचने में देर लगेगी। जो अधिक लोभी है चाहे उसे राजा बना दो खुश न होगा।

अभ्यास प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक नहीं है। कई ऐसे भी हैं जिन्हें इस अभ्यास की आवश्यकता नहीं। इन की पिछले जन्मों की कमाई है। वे किसी विदेह पुरुष के पास गये, संस्कार लिया और काम बन गया। किन्तु ऐसा कभी होता है। मानवीय जीवन का उद्देश्य अचिन्तपने को प्राप्त करना है। हर व्यक्ति की चिन्ता अलग अलग है। इस लिये कोई रहस्य ज्ञाता ही इलाज बता सकता है।

मेरी नीयत यही रही है कि मैं मुखियों, नेताओं और गुरुओं का सुधार करूं। उन्हें ठीक राय दूं। अलग अलग जीव का सुधार मेरे लिये कठिन काम

है। जैसे कहा गया है।

मूल को सींचो न कि पत्ते पत्ते को।

देश का शासन मूल है। मुझे आशा है कि ये किसी समय विशेष पुरुष के हाथ होगा जो दीन व दुनियां से ऊपर होगा। एसा महान पुरुष देश बल्कि दुनियां में ठीक रूप में कल्याण व कुशलता ला सकता है।

अपनी समझ के अनुसार मैं सन्तों की शिक्षा का ध्वजाधर हूं, सन्त पंथ का प्रतिनिधि हूं। दुखी जीवों को सुखी देखना चाहता हूं। कोई नाम देवे, मुझे इससे प्रयोजन नहीं। मुझे केवल उन्हें सुखी देखना है।

आप लोग मेरे कर्म कटाने के लिये सहायक हो रहे हैं। इसलिये आप का धन्यवाद करता हूं।

सब को राधास्वामी !

× × × ×

सत्संग हज़ूर परम दयाल जी महाराज स्थान दिल्ली

१५-१०-५६ सायंकाल

इस से पहले जो सत्संग हुए हैं वे त्रिलोकी तक सीमित थे। अब चौथे पद के विषय में कुछ वर्णन किया जायेगा।

समय समय की बात हैं कोई समय था जब मेरी सुरत नीचे से ऊपर तक जाने में कष्ट महसूस करती थी और ऊपर नहीं चढ़ा जाता था। आज वो समय आ गया कि ऊपर से नीचे आने को जी नहीं चाहता यह मेरे जीवन का अनुभव है। कर्म भोग के प्रभावाधीन बन्धा हुआ मौज वश दिल्ली आया। अपनी तड़प के सिलसिले में जो कुछ अनुभव हुआ उसके आधार पर मैंने पहले सत्संगों में कुछ कहा। मैंने बताया कि जीवन का ध्येय क्या है। निर्भय, निर्वैर, अडोल और अचिन्तपना मगर इस का क्रियात्मिक रूप केवल बातों का विषय नहीं है बल्कि रहनी से

सम्बन्ध रखता है। इस अचिन्तपने की अवस्था से परे भी एक और अवस्था है, प्रथम तो ये अचिन्तपना बेग़मी, बेफिक्री, सुख व शान्ति भाग्य से मिलती है और ये उस समय जब मन अपनी सत्ता को खो जाता है। वो अवस्था जिस का मैं संकेत कर रहा हूं चौथा पद, हस्ती, सतपद अथवा तुरया अवस्था है। जिस व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक और आत्मिक अवस्था अनुकूल अथवा समता में न हुई उस को इस चौथे पद का मिलना महा कठिन है। यही कारण है कि सन्तों के मार्ग की ऊंची शिक्षा साधारण जनता को नहीं बताई जाती। सोचिये मैं क्या कह रहा हूं। ये चौथा पद जीवन का भण्डार है। यह हस्ती ही हस्ती का देश है। यहां गुरु भी नहीं होता अर्थात जो गुरु का रूप आप बनाते हैं वो आपकी मनन शक्ति, चेतन शक्ति विचार शक्ति, विश्वास शक्ति अथवा प्रेम शक्ति का कार्य है। इस के अतिरिक्त वो देश हस्ती ही हस्ती का ठहरा। वहां दूसरे का क्या काम ! वहां तुम्हारा अपना आपा अथवा ज़ात ही होती है, इसे आप प्रकाश व शब्द का समुद्र कह सकते हैं। जब व्यक्तित्व (Individuality) समाप्त हो जाती है फिर कहने

सुनने का विषय नहीं रहता ।

बून्द दरया में मिली पानी की अब क्या जुस्तजू ।
मैंने प्रातः के सत्संग में कहा था कि मेरे अनुभव के अनुसार फकीर चन्द एक हैपने का बुलबुला है। सुरत निरत हो कर फकीर चन्द का हैंपना गुम हो जाता है । शेष क्या रह जाता है, सुनो :—

कई महापुरुषों ने हैरत का मुकाम भी कहा। यह ठीक है। इसलिये परमसंत कौन हुआ ? जो इस अवस्था में रहता है या जिस की वहां तक पहुंच है। क्या मैं अब पूछ सकता हूं कि उस अवस्था में रहने वाले की फिर क्या वासनायें बाकी रह सकती हैं ? उसे डेरा, धाम, मठ अथवा गद्दियां आदि बनाने की क्या ज़ाती गर्ज़-बाकी रहती है ? मगर सब को प्ररब्ध कर्म भोगने पड़ते हैं। इस लिए यह याद रखिये कि हर एक गद्दीपति परमसंत नहीं हो सकता । कहने को कोई लाख कहे कि वह यह है वह वह है मगर इन्सान की रहनी को भांपने वाले भांप जायेंगे । इस विषय में कबीर साहिब ने भी फरमाया है कि कोई विरला ही संत होता है। दाता दयाल जी महाराज ने भी इसी तरह फरमाया है :—

जग में जीव रहें बहुतेरे पर फकीर कोई एका ।

यहां इस सृष्टि में हर चीज़ का केन्द्र है, तत्वों का केन्द्र है । अभिप्राय यह है कि जिस के सहारे कोई काम करता है, जब कोई सियारा या ग्रह अपने केन्द्र के निकट आ जाता है उस का प्रभाव उस समय से भिन्न होता है जबकि वह अपने केन्द्र से दूर होता है । क्या आप नहीं देखते हैं कि दोपहर के समय जब पृथ्वी सूरज के निकट आ जाती है कितनी गर्मी होती है । इसी प्रकार जब बड़े बड़े सूर्य सत्तप्रकाश रूपी केन्द्र के इर्द गिर्द चक्र लगाने आरम्भ करते हैं उस समय अध्यात्मिकता की बाढ़ आ जाया करती है और सन्त इस दुनियां में अधिक संख्या में प्रकट होते हैं । यह नियम की बातें हैं जो मैं आप को बता रहा हूं । वर्तमान साइन्स भी यही कहती है कि ऐसे ग्रह भी हैं जिन की किरणों को धरती तक पहुंचने में कई सौ वर्ष लग जाते हैं और कई ऐसे ग्रह हैं जिन की किरणें यहां तक पहुंचने ही नहीं पाती ।

दातादयाज जी महाराज यदि धाम को न छोड़ते तो मुझे शायद उन के परमसन्त होने में शंका पैदा हो सकती थी । परम सन्त (Un-attache) अर्थात

किसी से लिप्त नहीं होता। हां, धाम या डेरा बनाना गुरमुखों का काम है। इन का धाम या डेरा होना भी आवश्यक है वरना लोगों का उद्धार कैसे होगा। गुरमुख मुसाफिर की गणना में आते हैं। मुसाफिर अपने साथ चलने वालों को ले जाता है जिस से दोनों का सफर आसानी के कट जाता है और वह मंजिल पर पहुच जाते हैं। दोस्तो ! जो ध्येय मुकाम तक पहुंच गया (अर्थात संत) वह मुसाफिर को मंज़िल तक कैसे ले जा सकता है। इसलिए गुरमुखों और डेरों का होना भी ज़रूरी है। किन्तु सन्त इस से ऊपर होते हैं।

मुझ से अब क ख ग नहीं पढ़ाया जाता। क्यों ? एक प्रधानाचार्य (Principal) के लिए पांचवीं कक्षा वालों को पढ़ाना कठिन है। उस को तो उस कक्षा का अध्यापक ही पढ़ायेगा। मेरा ख्याल है मेरी सीधी सादी और मोटी बातों को आप समझ रहे होंगे। हां ! जिन की काफी रुहानी उन्नति हो चुकी है वह मेरे पास आयें। जो कमी रह गई होगी मैं अपनी समझ के अनुसार उस को पूरा कराने का उपाय बतला दूंगा।

सन्तमत या राधास्वामी मत शुरु में मेरे लिए एक समस्या थी। इस ने मुझे आश्चर्य में डाल रखा था। अब भेद मिल गया। अब शायद मेरे स्पष्ट वर्णन से वह नाराज़ हों जो सच्चाई को सुनना नहीं चाहते और काल और माया के चक्र से निकलना जिन्हें पसन्द नहीं। इस से कोई यह न समझे कि मैं किसी का अथवा किसी विशेष गद्दी या डेरे का विरोधी हूं। मुझे तो केवल सच्चाई ब्यान करनी है। इस सिलसिला में कोई मुझ से नाराज़ हो तो यह अलग बात है।

जीव दुखी क्यों हैं ? इस का कारण यह भी है कि अज्ञान वश इन्होंने बांट कर रखी है। सीमित से सीमित बन गये हैं देशों, धर्मो और भाषाओं के विभाजन में सब जीवों की अपनी बुद्धि है। मेरे तेरे पने में फंसे हुए दुःखी हो रहे हैं। मैं तो कहता हूं कि सब इन्सान हैं। यहां विभाजन का कोई प्रश्न ही नहीं उठता।

मैं भाषण नहीं दे सकता किन्तु क्रियात्मिक हूं। मेरी बात के केवल भाव को समझो। मैं किसी की आंखों में मिट्टी डालकर अपना उल्लू सीधा नहीं करना चाहता।

मैं उस देश का वासी हूं जिस का वर्णन कर रहा हूं अर्थात चौथे पद में निवास रखता हूं। आप के लिये मुझे नीचे आना पढ़ता है। दातादयाल जी महाराज भी फरमाया करते थे :-

रहता हूं फरश[1] पर मैं खाकी बना हुआ हूं।
लेकिन है अरश[2] रहने का आली मुकाम[3] मेरा।
राहत सकूने दिल की बरकत से बहरावर हूं[4],
मुझ से मिलें जो दिल से पायें इनाम मेरा।

यह वो स्थान है जहां शरीर, मन और संकल्प समाप्त हो जाते है।

हंसा लोक हमारे अइहो, तातें अमृत फल तुम पइहो ॥
लोक हमारा अगम दूर है, पार न पावे कोई,
अति अधीन होय जो कोई, ता को देऊं लखाई।
मिरत लोक से हंसा आये, पुहुप दीप चलि जाई,
अबू दीप में सुमिरन करिहो, तब वह लोक दिखाई।
माटी का पिंड छूटि जायगा, औं यह सकल बिकारा,
ज्यां जल माहिं रहत है पुरइन, एसे हंस हमारा।
लोक हमारे आई हो हंसा तब सुख पइहो भाई,
सुख सागर असनान करोगे, अजर अमर होई जाई,
कहैं कबीर सुनो धर्मदासा, हंसन करो बधाई,
सेत सिघासन बैठक देहो, जुग जुग राज कराई,

1. पृथ्वी 2. आकाश 3. उंचा स्थान 4. सुख शान्ति की दात मुझे प्राप्त हैं

ये चौथा पद है जिसका कथन कबीर साहिब ने किया यही शव्द प्रकाश का समुद्र है। उस तक तब पहूंच सकता है जब इन्सान इन्सान बन जाता है !

सत्संगों के लिए डेरे बनने चाहिएं अन्यथा पारस्परिक सहायता का सिलसिला कैसे जारी हो सकेगा। यदि पैसा इकट्ठा नहीं होगा तो भी काम कैसे चलेगा। ये लौडस्पीकर तम्मू कनातें भला बिना पैसे कब लग सकते हैं।

चौथे पद में जाने के लिये ऐसे पुरुष से सम्बन्ध जोड़ो जो स्वयं वहां का वासी हो। इस लिये मैं निर्भय हो कर कहा करता हूं कि मेरा ध्यान करो। कई कहते हैं कि अपना करो अथवा गुरु का ध्यान करो किन्तु मैं ऐसा नहीं कहता। क्यों ? क्यों कि जो व्यक्ति जिस का ध्यान करेगा उस के गुण व स्वभाव उस में आते जाएंगे ये साइन्स का नियम है। अधूरे गुरु के ध्यान से आप पूरे नहीं बन सकते।

गुरु (कामिल इन्सान) में सर्वगुण इस प्रकार विद्यमान हैं जिस प्रकार एक लड़की में मांपने, स्त्री-

पने, बहिनपने, और बेटीपने का गुण विद्यमान रहता है। जो जिस भाव से देखेगा वैसे भाव लेगा। गुरु सर्वगुणसम्पन्न होता है। वो इष्ट माना गया है। इस लिये राधास्वामी मत में जीवित पूर्ण पुरुष के ध्यान की आज्ञा दी जाती है। इस के अतिरिक्त कोई सन्त की आखों से आखें मिलायेगा तो उस में शान्तिप्रद प्रभाव प्रवेश होंगे। स्त्री की आखों से आखें मिलायेगा तो और प्रकार के भाव लेगा, ये संगत का प्रभाव है।

जब शब्द और प्रकाश खुल जाए तो फिर गुरु के ध्यान की आवश्यकता शेष नहीं रहती। जितनी जल्दी इस से पीछा छूट जाये अच्छा है ! इस विषय में कबीर साहिब फरमाते हैं।

गुरू मांथे से उतरा, सिर से टली भलाय,
जैसा था वैसा भया कहे कबीर समझाय।

यदि शब्द और प्रकाश खुल जाने पर भी गुरु के ध्यान में लगे रहोगे तो आगे की उन्नति रुक जाएगी। आगे की उन्नति क्या है —

हस्ती ही हस्ती, हस्ती ही हस्ती का दौर रहता है,
न वहां चेला कोई और न ही कोई गुरू रहता हैं।

तमव्वज में रहता है नूर और शब्द इस हालत में,
जिन्दगी खतम हुई है और हस्ती का दौर रहता है।
वही है चश्माए ज़िन्दगी जिस को कहते हैं परम तत्व,
इस में सब अनुभवों का अनुभव रहता है।

मैं चाहता हूं कि अब मेरे पास कोई सज्जन न आये,
ज़िन्दगी में राम की तलाश थी जिन्दगी ने की उसकी जस्बजू।
ज़िन्दगी जाती रही तब आ गया मुकामे हूं।

अपने कर्म के भोगवश या मौजाधीन :-

आये थे चोला इन्सानी में अनुभव अपना कह चले,
क्यों आये थे इस का भी राज़ हम पा चले।

क्योंकि ये तड़प और सनक मानवीय जीवन में अनिवार्य है इस लिये मानव जाती को कहे जाता हूं कि वास्तविक ईश्वर, खुदा, मालिक अथवा आधार प्रकाश और शब्द है और वो प्रकाश शब्द आप ही खेल कर अनेक पिण्डों (वजूदों) द्वारा अपने उद्गम की ओर जाने का इच्छुक रहता है। इस के अनेकों अस्तित्वों (वजूदों) में प्रवेश होने से एक विशेष प्रकार की शक्ति अथवा सनसनाहट उत्पन्न होती है और समय पर समाप्त होती रहती है। इस शक्ति का नाम जीवन है। प्रकृति के खेल अनुसार जीवन कभी आत्मिक कभी मानसिक कभी

शारीरिक खेल खेलता रहता है। फिर जीवन क्या है ?

लव खुले और बन्द हूये

इस लिये अपने आप को पहचान कर संसार में इन्सान बन कर रहो। हम सब इन्सान भाई भाई हैं। ना ब्रह्म बनो, ना खुदा, ना बन्दा। केवल इस जीवन को समझ कर इसे खुशी से गुज़ारो और शब्द प्रकाश जिससे जीवन बनता है वो अपना इष्ट बना कर थोड़ा थोड़ा साधन करते रहो।

सन १९१८ ई० में जब मैं बग़दाद से दाता दयाल जी महाराज के पास आया तो उन्होंने पांच पैसे और नारीयल देकर तिलक लगाते हुए मुझ को जगतगुरु कह कर सम्बोधित किया। जैसा कि "फकीर परशाद" नामी पुस्तक अथवा अन्य पुस्तकों में लिखा हुआ है। मुझे जगत कल्याण के लिये काम करने का आदेश हुआ। वो मैं कर चला। सुनो! ये जगत का शब्द जनः से निकला है हर प्रकार की रचना का नाम जगत है। इस रचना के नियम और क्रम की पूरी समझ का नाम जगत का ज्ञान है। इस अनुभव अथवा ज्ञान के आधार पर मैं ने आवाज़ उठाई।

मनुष्य बनो

अर्थात

जीने का राज़ सीखो

समझो और उस के अनुसार जीवन गुज़ारो। शब्द और प्रकाश के सहारे फिर अपने हैपने को मिटा कर शब्द और प्रकाश हो जाओ।

इस लिये फकीर चन्द गुरु नहीं बल्कि वो अनुभव या ज्ञान ही जगत गुरु है। पिछले समय में ये अनुभव या ज्ञान अनेक रूपों में मज़हबो और पन्थों में शारीरिक ज्ञान, मानसिक ज्ञान, या आत्मिक ज्ञान के रूप में बिखरा हुआ था। अब इस समय मैं ने इसे इन्सान बनों के उच्चारण में प्रकट कर दिया। ये काम भी मैं ने हज़ूर सांवले शाह (बाबा सावन सिह जी महाराज) के आदेश से किया। वो कैसे? मैं ने अपने आत्मिक व अभ्यास की अवस्था के विषय में फरीद कोट से उन्हे लिखा। और चाहता था कि यदि कोई ग़लती या कमी होगी तो वो बतादेगें। उन्होंने उत्तर दिया कि जो कुछ मेरा अनुभव है सब ठीक है। इस के अतिरिक्त उन्होंने

मुझे लिखा कि जीवन एक घोड़ा है जिस पर दो रकाबें स्वार्थ और परमार्थ की हैं। यदि दोनों पर बराबर भार होगा तो जीवन आनन्दमय होगा। इस लिये दाता दयाल जी महाराज ने जगत कल्याण का काम मेरे जिम्मे दिया। हजूर सांवले शाह ने इस सिलसिला में उत्साहित किया और काम करने की विधि बताई। इस लिये मुझे विश्वास है कि जो कुछ मैं अपना अनुभव प्रकट करता हूं वो किसी प्रकार भी ग़लत नहीं है—

मुझे आशा है कि सन्तमत अथवा राधास्वामी-मत के वर्तमान आचार्य, गुरु इस नियम को समझते हुए और सच्चाई से घोड़े वाले उदाहरण को दृष्टि-गोचर रखते हुए सांसारिक व आत्मिक जीवन को अनुकूल बनाने का सिलसिला अपने डेरों में कायम रखेगें।

काम दाता ने दिया मैं कर चला निष्काम बन।
मेरा नहीं था उनका था मुझ में था फक्त सेवक पना।

अगर अन्य आचार्य कोई ग़लती समझें तो उनको मैं अधिकार देता हूं कि वो मेरे साहित्य अथवा मेरे

काम का खण्डन करें। मैं समझता हूं कि जो काम मैंने किया है वो केवल दु:खी, अज्ञानी, निबल, और प्रेमी व्यक्तियों के लिये है। आओ अब दाता दयाल जी महाराज का शब्द सुनिये :—

गुरु रूप न समझे कोय. भरम में पड़े अज्ञानी।
गुरु को मानुष जान कर, भक्ति का करें व्योहार,
सो प्रानी अति मूढ़ हैं, कैसे जायें भव पार।
देह के बने अभिमानी ... ... ।
गुरु को मानुष जानकर, शीत प्रसादी ले।
सो तो पशु समान हैं, संशय में अटके।
गुरु तत्व न जानी ... . ।
गुरु को मानुष जानकर. मानुष करो विचार।
सो नर मूढ़ गंवार हैं, भूल रहे संसार।
मोह के फांस फंसानी ।। भरम में०
गुरु को मानुष जानकर, भेड़ की चलते चाल।
वह बन्धन को क्यों तजें, व्यापे माया काल।
पड़े योनि की खानी ।। भरम में०
गुरु नाम आर्दश का, गुरु है मन का इष्ट।
इष्ट आदर्श को न लखे, समझो उसे कनिष्ट।
बात बूझे मन मानी ।। भरम में०

गुरु भाव घट में रहे, अघट सुघट को खान ।
जिसे समझ ऐसी नहीं, वह है मूढ़ समान ।
नहीं गुरु रूप पिछानी ॥ भरम में०

चेला तो चित में रहे, गुरु चित के आकास ।
अपने में दोनों लखे, वही गुरु का दास ।
रहे गुरु पद घट ठानी ॥ भरम में०

सुरत शिष्य गुरु शब्द है, शब्द गुरु का रूप ।
शब्द गुरु की परख बिन, डूबे भरम के कूप ।
नर जनम गंवानी ॥ भरम में०

गुरु ज्ञान का तत्व है, गुरु ज्ञान का सार ।
गुरु मत गुरु गम लखे, फिर नहीं भवभय भार ।
कमल जैसो गति आनो ॥ भरम में०

राधास्वामी सत्तगुरु सन्त ने, कही बात समझाय ।
जो नहीं माने वचन को, उरझ उरझ उरझाय ।
कौन समझे यह बानी ॥ भरम में०

सब को राधास्वामी !

परम सन्त परमदयाल पंडित फकीरचन्द जी महाराज का राधास्वामीमत अथवा सतमत के आचार्यों और महापुरुषों को सन्देश ।

पूज्यवर ! प्रार्थना है कि बिन बुलाये मेहमान की ईज्ज़त नहीं होती । मैं भी सभ्यता उन्हीं में से हूं । मगर मैं मान अपमान से कुछ परे हूं । मैं जो कुछ कर रहा हूं मान प्रतिष्ठा के ख्याल से नहीं है और यह लेख अपनी आतमा को निर्मल और स्वच्छ रखने के ख्याल से लिख रहा हूं ।

मुझे बचपन से किसी अज्ञात वस्तु की तलाश थी । धार्मिक सम्बन्ध में मालिक, परमात्मा या अकाल पुरुष की खोज थी । इसलिए भिन्न भिन्न विचारों ने मुझे घेरा हुआ था । मौज दाता दयाल

महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज के चरणों में ले गई। वहां यह बताया गया कि ज़ात सहृमदल कंवल, त्रिकुटी, सुन्न, महासुन्न, अलख, अगम, सत्त इत्यादि की सोपानों से परे है। इन सोपानों को तय करता हुआ ज़ात को देखने अथवा पाने में कई वर्ष लगा रहा। अपने कर्म भोग वश जो कुछ समझा उसको अपने साहित्य द्वारा वर्णन करता रहा और अभी अभी मैंने राधास्वामी मत की शताब्दी के अवसर पर भी अपने विचारों को प्रकट किया।

आप जैसी माननीय हस्तियों को इसलिए लिख रहा हूं कि सम्भव है मेरा निज अनुभव ग़ल्ती पर हो और मेरे ग़लत विचारों के कारण संसार के प्राणी पथभ्रष्ट न हो जायें। मैं सच्चे हृदय और शुद्ध भावना से निवेदन करता हूं कि आप महापुरुष मेरे विचारों और भावों को अपने निज अनुभव के आधार पर ग़लत समझें तो मेरी बातों का खंडन कर दें ताकि कोई पथभ्रष्ट होने से बच जाये। कठिनाई तो यह है कि मैं तो अब बदलने से रहा। क्यों ? क्योंकि मेरे अनुभव ने मुझे ज़ात का पूर्ण निश्चय और दृढ़ विश्वास करा दिया हुआ है।

मैं आप और संसार वालों को कुछ कहना चाहता हूं । क्या ?

बहुत शोर सुनते थे पहलू में दिल का ।
जो चीरा तो इक कतराये खून निकला ।

दुनियां को समय के अनुसार महापुरुषों ने अनेक प्रकार के विचार दिये । इसी कारण अनेक धर्म और पंथ बन गये । मैं अपनी खोज के आधार पर कह सकता हूं कि इन्सान का जीवन एक प्रकार की सनसनाहट है । यह तमव्वजे हस्ती अर्थात सत्ता में क्षोभ के क्रम में अनेक प्रकार के केन्द्रों से प्रकट हो हो कर या उन पर ठहरता और उनसे गुज़रता हुआ कई प्रकार के खेल खेलता रहता है और उस समय पर यह सनसनाहट (सुरत, आत्मा, मन, जीवपना) समाप्त हो जाती है ।

जीवन क्या है ? लब खुले और बन्द हुए । मेरी समझ में यही राज़े ज़िन्दगानी है । मैं यह भी ख़्याल करता हूं कि मानव जाति ने केवल अपने अज्ञान और अहंकार के कारण अनेक प्रकार के धर्म और पंथ बनाये और अन्य बातें घड़ घड़ कर संसार को इस

चक्कर में फंसाया जिसे हम इस समय अपनी आंखों से देख रहे हैं। (ये मेरा ही ख्याल नहीं बल्कि दाता दयाल महर्षि शिव ब्रत लाल जी महाराज का भी यही ख्याल था। उनके साहित्य से ये बाते स्पष्ट हैं) परिणाम ये हुआ कि मानव जाति इस अज्ञान से बट गई जिससे पारिवारिक, राजनैतिक, सामाजिक और अन्य झगड़े जो इस समय हमारे सामने हैं खड़े हो गये और मानव जाति विपत्ति ग्रहस्त हो गई। मैं समझता हूं कि इन विपत्तियों से छुड़ाने के लिये सन्त-मत, कबीरमत, या राधास्वामीमत का प्राक्ट्य हुआ है। इन की शिक्षा का सारांश यही नज़र आता है कि किसी न किसी प्रकार मानव जाति हकीकत का ज्ञान प्राप्त करके विपत्तियों से छुटकारा पा सके। यदि यही बात है तो धन्य है ये सन्तमत, कबीरमत, या राधास्वामीमत मगर कठिनाई ये है कि छुटकारा उसे ही मिल सकता है जो समझता है कि वो बंधा हुआ है। इस का ज्ञान आम जनता को नहीं। वे बेचारे समय के थपेड़ खाये जा रहे हैं। उनका दृष्टिकोण ऊंचा होने को नहीं आता वो इस योग्य नहीं कि

किसी सूक्ष्म बात को समझ सकें मगर आप लोग जिन्होंने विशाल निज अनुभव प्राप्त किये हैं इन बातों को भली प्रकार समझते हैं। इसके अतिरिक्त मैं ये कह सकता हूं कि आपने भी संसार या संसार वालों के अज्ञान को दूर करने का ठीक यत्न नहीं किया है बल्कि जहां पहले हिन्दु मुस्लम या अन्य धर्म बने हुए थे उसी प्रकार संतमत को प्रस्तुत किया जा रहा है। उसके अन्तर भी कई शाखाएं पैदा कर दी गई हैं जिससे सिद्ध किया जा रहा है कि ये मत भी औरों से बढ़ कर नहीं बल्कि इस में हर प्रकार की संकीर्णता का साधन विद्यमान है जो अध्यात्म से बिल्कुल विपरीत है।

मेरे जीवन के अनुभव ने सिद्ध किया है कि सन्तमत में बहुत सी रोचक और भयानक बातें भी मिला दी गई हैं ताकि जीव इधर खिचे रहें। वास्तव में असलियत अथवा सच्चाई से इन बातों का कोई सम्बन्ध नहीं।

जगत कल्याण के इस ख्याल से और इस भाव से कि भारत वर्ष में मानवता आये और एक राष्ट्र बन

जावे मैं चाहता हूं कि आप सब एक मंच पर इक्ट्ठे हो कर सच्चाई को ढके हुए लोहे के पर्दे को तोड़ दें ताकि कम से कम भारत वर्ष के धार्मिक विचारों के व्यक्ति रहस्य अथवा ठीक बात को समझ कर पारस्परिक घृणा और द्वेष को छोड़ सकें और अगर इस सच्चाई का ज्ञान आने वाली सरकारों को हो जावे तो वो धार्मिक और पंथिक संसार की आड़ में पैदा होने वाली राजनैतिक पार्टियों को बनने की आज्ञा न दें। मैं यह शब्द अपने कर्म के भोगवश अथवा मौजाधीन जगत कल्याणार्थ कह रहा हूं क्योंकि मेरे जिम्मे दाता दयाल जी महाराज ने कर्त्तव्य लगा रखा है।

मैं शायद इतनी निर्भयता से ये लेख न लिखता, न सत्संग कराता, मगर दाता दयाल महर्षि शिब ब्रत लाल जी महाराज के आदेश का पालन करना और हज़ूर सांवले शाह (बाबा सावन सिंह जी महाराज) का हुकम मानना मेरे लिये एक मजबूरी है। इसलिये मैं आशा करता हूं कि लोग सच्चाई का बाणा पहन कर सन्तमत की असली और सच्ची शिक्षा को जिसका उद्देश्य मानव जाति को लोक और परलोक

में सुख शान्ति पहुंचाना है ठीक रूप में फैलायेंगे और पुरानी वर्णन शैली अर्थात रोचक और भयानक बातों को छोड़ कर यथार्थ वर्णन शैली से काम ले कर मानव जाति के कल्याण का ख्याल रखेंगे।

दाता दयाल जी महाराज ने आदेश दिया था कि फकीर! अपना चोला छोड़ने से पूर्व शिक्षा को बदल जाना इसलिये मैंने जो अनुभव किया कह चला और अपने कर्त्तव्य को सच्चाई से निभा चला। बस!

आप सब का और संसार का

हितैषी

फकीर!